जुलाई , 2022, वर्ष : 43 अंक : 07 www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने जापान के प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे के निधन पर शोक व्यक्त किया।

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

जुलाई , 2022, वर्ष : 43 अंक : 07

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

लेह, लद्दाख में शिया मस्जिद अंजुमन-ए-इमामिया की प्रार्थना सभा में परम पावन दलाई लामा।

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन पलजोर , तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

• परम पावन दलाई लामा ने लद्दाख के लेह में जोखांग, मस्जिद और गिरजाघर की यात्रा कीं 1

• परम पावन दलाई लामा ने नवनिर्वाचित भारतीय राष्ट्रपति को बधाई दी 2

• सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की नृशंस हत्या पर हार्दिक संवेदना व्यक्त की 3

• स्थायी रणनीति समिति की दूसरी बैठक 4

• अवर सचिव उज़रा ज़ेया तिब्बत-डीसी के कार्यालय में परम पावन दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन समारोह में शामिल हुई 5

• स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने भारत के १५वीं राष्ट्रपति के रूप में चुने जाने परश्रीमती द्रौपदी मुर्मू को बधाई दी। 6

• परम पावन दलाई लामा की तस्वीर रखने के आरोप में तीन तिब्बतियों को गिरफ्तार किया गया 7

• सम्मानित पूर्व तिब्बती राजनीतिक कैदी जिग्मे ग्यात्सो की चीनी उत्पीड़न से ५६ वर्ष की आयु में निधन 8

• तिब्बती उद्यमी और परोपकारी व्यक्ति को अन्यायपूर्ण तरीके से १८ साल कैद की सजा 9

• 'गैरकानूनी' वीचैट समूह बनाने के आरोप में तिब्बती गिरफ्तार निर्वासन में एक सूत्र का कहना है कि समूह तिब्बती धार्मिक नेताओं के जन्मदिन मनाने के लिए बनाया गया था। 10

समाचार -

• आदरणीय ज़ीक्याब रिनपोछे ने चेक के उप प्रधानमंत्री से मुलाकात की 11

• पूरे भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने परम पावन १४वें दलाई लामा की ८७वीं जयंती मनाई 12

• अमेरिकी प्रतिनिधि माइकल मैककॉल और जिम मैकगवर्न ने तिब्बत-चीन संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान को बढ़ावा देने के लिए विधेयक पेश किया 13

• निर्वासित तिब्बती संसद ने स्थानीय तिब्बती विधायिकाओं में लोकतंत्र को मजबूत करने पर कार्यशाला का आयोजन किया 14

• निर्वासित तिब्बती सांसद ने 'रिपब्लिक' से बात की, दलाई लामा के प्रभाव से चीन के चिंतित होने का कारण बताया 15

• संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग का५०वां सत्र: ४७सदस्य देशतिब्बत में मानवाधिकार की स्थिति को लेकर 'गंभीर रूप से चिंतित' 16

• प्रतिनिधि डॉ. आर्य ने जापान संसदीय समर्थक समूह के कार्यालय का दौरा किया 17

• तिब्बत के लिए ऐतिहासिक क्षण : जिनेवा में पार्क डू तिब्बत में तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज और बौद्ध ध्वज फहराया गया 18

• प्रतिनिधि रिगज़िन जेनखांग ने यूरोपीय संघ में कैटलन सरकार के प्रतिनिधि से मुलाकात की 19

• भारतीय सेना के अधिकारियों ने 'बेहतर समझ' बनाने के लिए नए पाठ्यक्रम में तिब्बत के बारे में सीखा 20

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट www.indiatibet.net Email: indiatibet7@gmail.com

• प्रधानमंत्री द्वारा दलाई लामा को जन्मदिन की बधाई देने पर चीन की आपत्ति को भारत ने खारिज किया 21

• तिब्बत में सीमावर्ती गांव : भारत को हिमालय में चीन की नई 'आंख और कान' से सावधान रहना चाहिए 22

अपनी बात

भारत कब करेगा दलाईलामा को भारत रत्न से सम्मानित ?

तिब्बती धर्मगुरु दलाईलामा अपने जीवन के 86 वर्ष पूरे कर चुके। इसी 6 जुलाई, 2022 को विश्वभर में उनका 87 वाँ जन्मदिन समारोहपूर्वक मनाया गया। भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने फोन करके उन्हें जन्मदिन की बधाई दी तथा ईष्वर से उनके दीर्घजीवन हेतु प्रार्थना की। नरेन्द्र मोदी जी भलीभाँति जानते हैं कि भारत दलाई लामा के लिये "गुरुगृह" है। दलाई लामा कहते हैं कि भारत हमारे तिब्बत का गुरु है तथा तिब्बत गुरुभूमि भारत का चेला। बौद्व दर्षन भारत से ही तिब्बत पहुँचा इसलिये भारतभूमि समस्त तिब्बती लोगों की पुण्यभूमि है। साम्राज्यवादी चीन ने 1959 में जब अवैध नियंत्रण किया उस समय तिब्बत के तत्कालीन राजप्रमुख दलाई लामा अपने हजारों सहयोगियों के साथ किसी अन्य देश में जाने की सोच सकते थे। भारत के तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्व ने तिब्बत में चीन की उपनिवेशवादी नीति का विरोध भी नहीं किया था। इस कटु सत्य के बावजूद दलाई लामा ने भारत के साथ तिब्बत के सैकड़ों वर्षों से जारी सांस्कृतिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक संबंधों को महत्व दिया और भारत में शरण ली। यह उनका दूरदर्शीपूर्ण निर्णय था। दलाई लामा के व्यक्तित्व-कृतित्व के विश्लेषण से उनकी चार प्रतिबद्धतायें स्पष्ट हैं जो कि वेश्विक महत्व की हैं।

पहली प्रतिबद्धता है मानवीय मूल्यों का विकास। दलाई लामा कहते हैं कि विष्व के 7 अरब मनुष्य एक समान हैं। मनुष्य के बीच भेदभाव मनुष्य द्वारा ही निर्मित है, जबकि स्वभावतः परस्पर निर्भरता मानवीय विशेषता है। एक मनुष्य का ही विस्तृत रुप परिवार ,गाँव, प्रदेश, देश तथा संसार है। यही "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का विचार है। इस प्रकार शांति, अहिंसा, करुणा तथा परस्पर सद्भाव एवं सहयोग जैसे मानवीय मूल्यों को सदैव विकसित करना हमारी वैश्विक जिम्मेदारी है।

दूसरी प्रतिबद्धता है विभिन्न रिलिजन अर्थात् पंथ, मजहब या सम्प्रदाय के बीच सद्भाव को बढ़ावा। दलाई लामा की दृष्टि में विश्व के लिये इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण भारत है। भारत में विश्व के सभी रिलिजन को मानने वाले एक साथ रहते हैं। सम्प्रदायों के बीच सद्भाव के लिये आवश्यक है कि कोई भी सम्प्रदाय या उसका अनुयायी अपने कार्य एवं व्यवहार से अन्य किसी भी सम्प्रदाय का अपमान मत करे। हम अपने-अपने मजहब के अनुसार पूजापाठ करें लेकिन अन्य मजहबों में प्रचलित पूजापाठ का भी सम्मान करें। यही है "सर्वपंथ समादर भाव"। सभी पंथों, रिलिजन या मजहब का आपस में एक दूसरे के प्रति समान आदर का भाव। सर्वपंथ समादर भाव को विकसित करके ही मजहबी संघर्ष को रोकना संभव है।

तीसरी प्रतिबद्धता है तिब्बती पहचान का संरक्षण एवं संवर्धन। तिब्बती होने के नाते दलाई लामा इस संकल्प के लिये भी समर्पित हैं। तिब्बत को विष्व का "तीसरा ध्रुव" और "संसार की छत" कहा जाता है कियोकि यहाँ ग्लेसियर (हिमनद) की भरमार है। तिब्बती ग्लेसियर्स से अनेक नदियाँ निकली हैं जिनमें सिंधु, ब्रह्मपुत्र तथा सतलज भी शामिल हैं। तिब्बत के पड़ोसी देशो में जल की आवश्यकता तिब्बती ग्लेसियर्स से पूरी होती है। चीन की भौतिकवादी साम्राज्यवादी नीति के कारण तिब्बत के ग्लेसियर्स सिकुड़न और समाप्ति के शिकार हैं। तिब्बती संस्कृति पर्यावरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिये प्रेरित करती है। तिब्बती शिक्षा, इतिहास तथा जीवन- शैली इसके उदाहरण हैं। परतंत्रता के बावजूद तिब्बतियों ने अपनी इस पहचान को बचाये रखा है। बौद्व दर्शन में इन्हीं तथ्यों पर जोर दिया गया है। जल, जंगल, जमीन, जानवर तथा सभी प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों के सिर्फ समुचित उपयोग पर जोर। चीन की भोगवादी नीति है प्रकृति से संघर्ष की। इसके विपरीत तिब्बत का योगाधारित दर्शन है प्रकृति से समन्वय का। यही है तिब्बती पहचान, जो संपूर्ण विश्व के लिये कल्याणकारी है।

चौथी प्रतिबद्धता है प्राचीन भारतीय नालंदा परंपरा को पुनर्जीवित करना। इसी परंपरा ने भारत को "जगत गुरु" बनाया। विश्व के कोने-कोने से लोग ज्ञानार्जन के लिये भारतीय शिक्षण संस्थानों में आते थे। भारतीय विश्वविद्यालय में ज्ञान की हर शाखा में प्रचुर सामग्री उपलब्ध थी। षास्त्रार्थ से इसमें सदैव नयापन रहता था। उत्तम कोटि के ग्रंथ रचे जाते थे। ये शिक्षण संस्थान मानवीय मूल्यों के विकास के केन्द्र थे। दलाई लामा अपने अधिकांष प्रवचनों में इन तथ्यों पर जोर देते हैं। उनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा आशीर्वाद से भारत स्थित सभी तिब्बती शिक्षण संस्थान निष्ठापूर्वक इस दिशा में क्रियाशील हैं। अनेक लुप्तप्राय संस्कृत ग्रंथों का भोटी में तथा लुप्तप्राय भोटी ग्रंथों का संस्कृत में अनुवाद इसी का उदाहरण है।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को प्रकाशित - प्रचारित-प्रसारित करके दलाई लामा भारत की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं। कोरोना काल के बाद पहली बार अपनी लद्दाख-यात्रा में दलाई लामा ने फिर से अपनी चारो प्रकाशित प्रतिबद्धताओं को दोहराया है। विभिन्न राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय सम्मानों एवं पुरस्कारों को प्राप्त कर चुके दलाई लामा हम भारतीयों के लिये महत्वपूर्ण प्रेरणास्रोत हैं। राजनीतिक बाध्यताओं से परे होकर हम भी उन्हें "भारत रत्न" से सम्मानित करें। चीन सरकार इस प्रकार के किसी भारतीय निर्णय का विरोध जरुर करेगी लेकिन भारत-चीन संबंधों की बनावटी मजबूती के लिये दलाई लामा के योगदान की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये। दलाई लामा का सम्मान भारत का आन्तरिक मामला है। इसी कामना के साथ दलाई लामा जी को उनके जन्मदिन की "तिब्बत देश" पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

• परम पावन दलाई लामा ने लद्दाख के लेह में जोखांग, मस्जिद और गिरजाघर की यात्रा कीं

dalailama.com, २१ जुलाई, २०२२

शेवाट्सेल, लेह, लद्दाख केंद्रशासित प्रदेश, भारत। परम पावन दलाई लामा१५ जुलाई को लद्दाख पहुंचे। यहां पहुंचने के बाद उन्होंने आज २१ जुलाई को अपने पहले सार्वजनिक कार्यक्रम में सामने आए। इसमें उन्होंने लेह के मध्य में स्थित प्रमुख बौद्ध मंदिर जोखांग, जामा मस्जिद और अंजुमन-ए-इमामिया मस्जिदों और मोरावियन चर्च की तीर्थयात्रा की।

परम पावन के जोखांग आगमन पर लद्दाख बौद्ध संघ के अध्यक्ष थुप्टेन छेवांग और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। जोखांग मंदिर में परम पावन ने बुद्ध, मंजुश्री, सहस्र सशस्त्र अवलोकितेश्वरऔर गुरु पसंभव की प्रतिमाओं के समक्ष अपना सिर झुकाया। उन्होंने ल्हासा जोवो के प्रतीक स्वरुप बुद्ध की प्रतिमा के सामने अपना आसन ग्रहण करने से पहले मठों, गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों और अन्य मेहमानों का गर्मजोशी से स्वागत किया।

थुप्टेन छवांग ने परम पावन को यहां का पारंपरिक मंडल भेंट किया। इसके बाद अन्य प्रतिनिधियों ने उन्हें रेशमी खटक (स्कार्फ) पहनाया। तीन बार प्रार्थना करने के बाद हृदय सूत्र का पाठ किया गया।

परम पावन ने जोखांग में और बाहर प्रांगण में एकत्रित सभी लोगों का अभिनन्दन करते हुए अपना प्रवचन प्रारंभ किया। उन्होंने तिब्बती में नमस्कार 'ताशी देलेग' करने के बाद कहा,'हम सभी बहुत पुराने मित्र हैं और हमारे बीच संबंधों के बंधन ठोस हैं। मैं आपके विश्वास और भक्ति के लिए आपको धन्यवाद देना चाहता हूं। क्योंकि यह मेरे लिए प्रोत्साहन का स्रोत है।

उन्होंने कहा,'हालांकि हम जल्द ही फिर से मिलेंगे, लेकिन आज सुबह मैं आपको बताना चाहता हूं कि धर्म का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए मैं सभी जीवों के कल्याण के लिए जितना हो सके योगदान जारी रखने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम धर्म का अध्ययन करें, जो हमने सीखा है उस पर चिंतन करें और फिर जो हमने समझा है उसे व्यवहार में लाएं। हमें बुद्ध के वचनों से तैयार किए गए त्रिपिटकों का अध्ययन करना चाहिए और ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य की साधना में संलग्न होना चाहिए।'

जोखांग से परम पावन सुन्नी जामा मस्जिद गए। उन्होंने वहां उपस्थित श्रोताओं को बताया कि इस धर्मस्थल की तीर्थयात्रा करना उनके लिए कितनी खुशी की बात है, जो अंतर-धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देने की उनकी प्रतिबद्धताओं के अनुरुप है।

अन्य धर्मों के पूजा स्थलों पर प्रार्थना करना मेरा शगल है। जब भी मौका मिलता है, मैं यह प्रार्थना करता हूं। चूँकि सभी धर्म करुणा का संदेश देते हैं, इसलिएवे सम्मान के पात्र हैं। भले ही उनके दार्शनिक विचार भिन्न हो सकते हैं।

अमदो में बचपन से ही मेरा मुसलमानों के साथ दोस्ताना संबंध रहा है। बाद में ल्हासा में भी मुस्लिम व्यापारियों के छोटे समुदाय के साथ मेरी मित्रता थी जो तिब्बती सरकार के आधिकारिक कार्यक्रमों में नियमित रुप से शामिल होते थे। इसलिए आज यहां मुझे एक बार फिर मुस्लिम भाइयों और बहनों से मिलकर खुशी हो रही है।'

इसके बादपरम पावन अंजुमन-ए-इमामिया नामक शिया मस्जिद गए। इमाम बरगढ़ में परम पावन का स्वागत करते समय मेजबान ने याद किया कि परम पावन ने ही २००६ में इस मस्जिद का उद्घाटन किया था। इसके बाद से यहां के प्रबंधकों ने उनका कई बार स्वागत किया है। विभिन्न वक्ताओं ने परम पावन को शांति का मसीहा और भाईचारे का अग्रदूत बताया और

लेह, लद्दाख में शिया मस्जिद अंजुमन-ए-इमामिया की प्रार्थना सभा में परम पावन दलाई लामा ।

उनकी प्रशंसा की। एक वक्ता ने तो यहां तक घोषणा कर दी कि, 'आज यहां आपकी उपस्थिति लद्दाख के विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच एकता, शांति और भाईचारे का मजबूत और आवश्यक संदेश है जो पूरी दुनिया में जाएगी।'

परम पावन ने इस अवसर पर कहा कि भारत में धार्मिक सद्भाव की एक अच्छी, लंबे समय से चली आ रही परंपरा है जो लद्दाख में विशेष रुप से दिख रही है।

'चूंकि हम सभी इंसान मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक रुप से समान हैं और चूंकि हम सभी खुशी चाहते हैं जो कि हमारा अधिकार भी है। इसलिए हमें हमेशा एक-दूसरे की मदद करने की कोशिश करनी चाहिए।'

अंत में परम पावन ने लेह में मोरावियन चर्च का दौरा किया जहाँ उपस्थित जन समूह ने विश्व में शांति और सद्भाव में उनके योगदान की सराहना में एक गीत गाकर उनका स्वागत किया।

परम पावन ने सभा को संबोधित करते हुए बताया, 'आज जो आपने गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया, उसकी मैं तहे दिल से सराहना करता हूं। यह मुझे कई ईसाई भाइयों और बहनों, वैज्ञानिकों और धार्मिक नेताओं की याद दिलाता है।जैसे कि पोलिश पोपजॉन पॉल-II, जिनके साथ मेरे दोस्ताना संबंध रहे हैं।'

जिस तरह से ईसाइयों ने दुनिया भर में गरीबों और जरूरतमंद लोगों की मदद करने में करुणा दिखाई है और इसके साथ-साथ विश्व विकास योगदान दिया है, उसके लिए उन्होंने उनकी प्रशंसा की और कहा कि उनका यह योगदान मानवता की एकता की भावना को दर्शाता है।

• परम पावन दलाई लामा ने नवनिर्वाचित भारतीय राष्ट्रपति को बधाई दी

Tibet.net, २१ जुलाई २०२२

धर्मशाला। परम पावन दलाई लामा ने श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले लोकतांत्रिक देश भारत के राष्ट्रपति चुने जाने पर पत्र लिखकर बधाई दी है।

परम पावन ने लिखा,'आप इस महत्वपूर्ण पद को ऐसे समय में ग्रहण कर रही हैं जब अंतरराष्ट्रीय समुदाय भारत के महत्व के बारे में अधिक जागरुक हो

रहा है। भारत के पास विश्व शांति और विकास में योगदान करने के लिए बहुत- कुछ है।
उन्होंने लिखा,'मैं भारत के प्रति गहरे सम्मान का भाव रखता हूं। भारत सरकार के सबसे लंबे समय तक के अतिथि के रूप में मुझे देश के हर हिस्से की यात्रा करने का अवसर मिला है। हजारों वर्षों से भारत ने करुणाऔर अहिंसाके सिद्धांतों को कायम रखा है और महात्मा गांधी ने अहिंसा के सिद्धांत को दूर-दूर तक फैलाया है। इसमें बड़े पैमाने पर व्यक्तियों और दुनिया के भीतर शांति पैदा करने की क्षमता है। वैसे भी भारत धार्मिक सद्भाव की भूमि है, यहां कई अलग-अलग समुदाय एक साथ रहते हैं।'

मैं अक्सर खुद को भारत के पुत्र के रूप में वर्णित करता हूं, क्योंकि मेरे सोचने का तरीका बौद्ध प्रशिक्षण से मुझे प्राप्त हुआ है। जैसा कि आप जानते हैं, तिब्बती बौद्ध संस्कृति की जड़ें नालंदा विश्वविद्यालय के विद्वान-विशेषज्ञों द्वारा विकसित तर्क और विश्लेषण की परंपराओं में निहित हैं।
अपनी बात को जारी रखते हुए उन्होंने लिखा,'आज हालांकि आधुनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण मूल्य है, क्योंकि इसका ध्यान भौतिकवाद पर है। मन और भावनाओं के कामकाज के बारे में प्राचीन भारतीय ज्ञान में अधिक जागरूकता और रुचि पैदा करके इसे संतुलित करने की आवश्यकता है। लोग भावनात्मक स्वच्छता विकसित करना सीख सकते हैं, जिसमें उनकी नकारात्मक भावनाओं से निपटना और मन की शांति प्राप्त करना शामिल है। इस लिहाज से भारत अपने प्राचीन ज्ञान के साथ आधुनिक शिक्षा को मिलाने के लिए सबसे अच्छी स्थिति में है। मैं इस खजाने के बारे में अधिक जागरूकता और रुचि पैदा करने के लिए इस प्रयास को जारी रखने, विशेष रूप से भारतीय भाइयों और बहनों के बीच करुणा की शक्ति और इसे दुनिया के साथ साझा करने के लिए भी प्रतिबद्ध हूं।
उन्होंने कहा, 'जैसा कि आप जानते हैं, तिब्बती लोगों और मुझे प्राचीन बौद्ध संस्कृति सहित हमारी पहचान की रक्षा और संरक्षण के प्रयास में सरकार और भारत के लोगों से अद्वितीय समर्थन प्राप्त हुआ है। मैं इस अवसर पर एक बार फिर आपके माध्यम से भारत सरकार और भारत के लोगों के प्रति हमें छह दशकों से अधिक समय से प्रदान किए जा रहे गर्मजोशीपूर्ण आतिथ्य के लिए अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूं।
परम पावन ने विश्वास व्यक्त किया कि नई राष्ट्रपति भारत की ताकत को मजबूत करने और भारत के प्राचीन ज्ञान के खजाने से प्रेरित अधिक शांतिपूर्ण विश्व का निर्माण करने के लिए हरसंभव नेतृत्व प्रदान करेंगी। उन्होंने पत्र का समापन राष्ट्रपति को शुभकामनाएं देकर और उनको अभिवादन के साथ किया।

• सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की नृशंस हत्या पर हार्दिक संवेदना व्यक्त की

Tibet.net, ०८ जुलाई २०२२

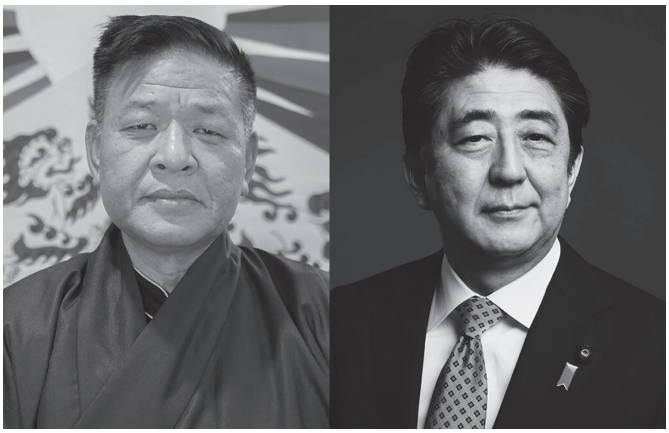

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की नृशंस हत्या के बाद शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी संवेदना और प्रार्थना व्यक्त की।

सिक्योंग ने स्व आबे की पत्नी को शोक पत्र में लिखा है, 'केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और दुनिया भर के तिब्बती लोगों की ओर से मैं जापान के पूर्व प्रधानमंत्री और आपके प्यारे पति शिंजो आबे के असामयिक निधन पर अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं।'
सिक्योंग ने आगे लिखा, 'हिंसा के मूर्खतापूर्ण कृत्य की निंदा के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं, जिसने इस दुनिया से एक दूरदर्शी और मजबूत नेता को छीन लिया है। इस भारी नुकसान को दुनिया भर के तिब्बती लोग दृढ़ता से महसूस कर रहे हैं। वह तिब्बती लोगों के लंबे समय से दोस्त थे और तिब्बत के लोगों की स्वतंत्रता के संघर्ष में उनके समर्थक थे। तिब्बत के ऑल पार्टी जापानी संसदीय समर्थक समूह की स्थापना में उनका प्रमुख योगदान रहा है। उनके इस योगदान को हमेशा गहन कृतज्ञता के साथ याद किया जाएगा।' .
उन्होंने अंत में लिखा,'वैसे तो हम उनकी निर्मम हत्या पर शोक व्यक्त करते हैं, लेकिन उनकी विशाल विरासत पीढ़ियों तक जीवित रहेगी। इस कठिन समय में हम आपके परिवार और जापान के लोगों के साथ खड़े हैं। एक बार फिर, कृपया हमारी गहरी संवेदना स्वीकार करें।

• स्थायी रणनीति समिति की दूसरी बैठक

Tibet.net, २७ जुलाई २०२२

धर्मशाला।१६वीं कशाग की नवस्थापित स्थायी रणनीति समिति की दूसरी बैठक २७ जुलाई को यहां धर्मशाला में शुरू हुई। २७-२९ जुलाई तक आयोजित तीन दिवसीय बैठक की अध्यक्षता सिक्योंग पेन्पा छेरिंग करेंगे और इसमें ऑनलाइन माध्यम से शामिल सलाहकार कसूर तेम्पा छेरिंग के अलावा कसूर डोंगचुंग न्गोडुप (तिब्बत ब्यूरो में परम पावन के प्रतिनिधि, दिल्ली)और पूर्व विशेष दूत केलसांग ग्यालत्सेन सहित समिति के सभी सदस्य शामिल हैं। उपस्थित सदस्यों में सुरक्षा विभाग के सचिव कर्मा रिनचेन, सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) के सचिव कर्मा चोयिंग, तिब्बत नीति संस्थान (टीपीआई) के सचिव दावा छेरिंग और कशाग सचिवालय के

स्थायी रणनीति समिति की दूसरी बैठक।

राजनीतिक सचिव ताशी ग्यात्सो भी हैं। गादेन फोडरंग कार्यालय के सचिव न्गावा छेग्याम भी विशेष निमंत्रण पर बैठक में ऑनलाइन माध्यम से भाग ले रहे हैं।

इस तीन दिवसीय बैठक के दौरान समिति चल रहे रणनीतिक कार्यक्रमों की प्रगति की समीक्षा करेगी और इस पर चर्चा करेगी। इसके साथ ही समिति के उद्देश्यों के अनुसार भविष्य की वकालत की पहल पर विचार करेगी।

१६वीं कशाग द्वारा चीन-तिब्बत वार्ता पर पिछले कार्य दल के विघटन के बाद, इस नई स्थायी रणनीति समिति की स्थापना की गई थी। समिति की पहली बैठक पिछले साल नवंबर में धर्मशाला में हुई थी।

• अवर सचिव उज़रा ज़ेया तिब्बत-डीसी के कार्यालय में परम पावन दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन समारोह में शामिल हुई

Tibet.net, ०८ जुलाई २०२२

तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक श्रीमती उजरा ज़ेया।

वाशिंगटन डीसी। यहां के तिब्बत-डीसी कार्यालय, इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत (आईसीटी) और कैपिटल एरिया तिब्बतन एसोसिएशन (सीएटीए) ने संयुक्त रूप से ०६ जुलाई की शाम को कार्यालय में परम पावन दलाई लामा का ८७वां जन्मदिन मनाया। परम पावन के जन्मदिन समारोह तिब्बतियों, तिब्बत के मित्रों और दुनिया भर में परम पावन के अनुयायियों द्वारा मनाया जाने वाला एक दिन है। इस जन्मदिन समारोह को तिब्बती में त्रुंगला यारसोल के नाम से भी जाना जाता है।

इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक अवर सचिव उजरा ज़ेया थीं। अन्य विशिष्ट अतिथियों में चेक राजदूत हाइनेक कोमोनिसेक और कसूर कृति रिनपोछे शामिल रहीं। इस अवसर पर परम पावन को अपनी शुभकामनाएं देते हुएअवर सचिव ज़ेया ने परम पावन दलाई लामा के साथ अपनी हालिया मुलाकात को याद किया और तिब्बती लोगों के मानवाधिकारों और धार्मिक स्वतंत्रता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। चेक राजदूत कोमोनिसेक ने एक बड़े पड़ोसी देश के बगल में रहने के चेक गणराज्य के ऐतिहासिक अनुभवों को याद करते हुए तिब्बती लोगों के प्रति चेक लोगों के गहरे संबंध और समर्थन को उजागर किया। उन्होंने खुद के भारत में राजदूत रहते हुए परम पावन दलाई लामा के साथ राजनयिक बातचीत के माध्यम से अपने व्यक्तिगत संबंध को याद किया। कसूर कीर्ति रिनपोछे ने अवर सचिव और अन्य लोगों को तिब्बती मुद्दे के समर्थन के लिए धन्यवाद दिया और परम पावन दलाई लामा के साथ फिर से जुड़ने के लिए तिब्बत के अंदर तिब्बती लोगों के सपने को साकार करने के लिए उनके निरंतर समर्थन के लिए सभी से आग्रह किया।

इस अवसर पर प्रतिनिधि नामग्याल चोएदुप ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और बधाई दी। उन्होंने परम पावन के मानवता की एकता, सौहार्दता और ध्यान की साधना के संदेश की लगातार बढ़ती प्रासंगिकता के बारे में बताया।

शाम के जन्मदिन के स्वागत समारोह में वॉयस ऑफ अमेरिका की तिब्बती सेवा में कार्यरत कसूर तेनज़िन टेथोंग, रग्या महायान बौद्ध केंद्र, वर्जीनिया के शिंगसा रिनपोछे, अमेरिकी सीनेट समिति के विदेशी संबंध मामलों के वरिष्ठ अधिकारी माइकल शिफ़र, यूनाइटेड स्टेट्स एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट की एशिया प्रमुख अंजलि कौर, कैपिटॉल हिल स्थित अमेरिकी कांग्रेस ऑफिस और अमेरिकी विदेश विभाग के कर्मचारियों और तिब्बत के कई दोस्तों ने भी भाग लिया।

आईसीटी के अंतरिम उपाध्यक्ष तेनचो ग्यात्सो भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। कैपिटल एरिया तिब्बती एसोसिएशन के पूर्व टीपा कलाकार कर्मा ग्यात्सो और न्यूयॉर्क के गायक दावा रिनचेन ने परम पावन को समर्पित गीतों का गायन किया।

• स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने भारत के १५वीं राष्ट्रपति के रूप में चुने जाने परश्रीमती द्रौपदी मुर्मू को बधाई दी।

Tibet.net, २२जुलाई २०२२

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने द्रौपदी मुर्मू को हाल ही में हुए राष्ट्रपति चुनाव में विजयी होने पर को बधाई दी।

निर्वाचित राष्ट्रपति को बधाई देते हुए स्पीकर ने लिखा, 'मैं इस अवसर पर आपको पूरे तिब्बती लोगों और निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से भारत की १५वीं राष्ट्रपति और भारतीय इतिहास में पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर आपकी जीत के लिए आपको हार्दिक बधाई

देना चाहता हूं।'
भारत के लोगों और भारत सरकार ने लगातार तिब्बतियों और तिब्बत के अहिंसक संघर्ष का समर्थन किया है जिसके लिए हम बहुत आभारी हैं। भारत छह दशकों से अधिक समय से तिब्बतियों का दूसरा घर है और हम भारत द्वारा प्रदान की गई दया और समर्थन के लिए ऋणी हैं।
'हम आपको भारतीय लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने की दिशा में आपके भविष्य के महान प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देते हैं। हमें यकीन है कि आने वाले वर्षों में विश्व शांति की बेहतरी की दिशा में काम करना आपकी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में होगा।'

• परम पावन दलाई लामा की तस्वीर रखने के आरोप में तीन तिब्बतियों को गिरफ्तार किया गया

Tibet.net, १५ जुलाई २०२२

तिब्बतियों द्वारा अपने आध्यात्मिक धर्मगुरु परम पावन दलाई लामा के जन्मदिन ०६ जुलाई २०२२के आसपास जून और जुलाई के महीने में को उनकी तस्वीरों को अपने घरों की वेदियों पर रखने के आरोप में उन्हें गिरफ्तार किए जाने की सूचना मिली है। दो हालिया रिपोर्टों से संकेत मिले हैं कि कर्ज़े (चीनी: गंजी) काउंटी के एक अज्ञात तिब्बती व्यक्ति को परम पावन दलाई लामा की तस्वीर घर पर रखने के आरोपों में बुरी तरह से पीटा गया और दो तिब्बती बहनों को गिरफ्तार कर हिरासत गृह में रखा गया है।
चीनी अधिकारियों ने परम पावन दलाई लामा के एक विशाल चित्र को घर में कथित रूप से प्रदर्शित करने के लिए जून में कर्ज़े काउंटी से ६० वर्ष उम्र

योडों और ज़ुंकर।

के एक तिब्बती व्यक्ति को गिरफ्तार किया था और बुरी तरह पीटा था।पुलिस को एक अघोषित छापेमारी में चित्र मिला जिसे तुरंत जब्त कर लिया गया। तिब्बत टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार,अज्ञात तिब्बती को जून में कर्ज़े काउंटी के अधिकारियों ने गिरफ्तार किया था और उसे काउंटी जेल ले जाया गया था। माना जाता है कि वह वर्तमान में वहीं कैद है।

गिरफ्तारी से पहले वह व्यक्ति पूर्ण रूप स्वस्थ था, लेकिन कथित तौर पर उसकी गिरफ्तारी के दौरान गंभीर रूप से पिटाई और यातना के कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया। सूत्र ने कहा कि पुलिस हिरासत में रहते हुए उस व्यक्ति को अस्पताल जाना पड़ा, हालांकि कारण स्पष्ट नहीं है।
एक सूत्र ने बताया कि अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद उस व्यक्ति को वापस काउंटी जेल ले जाया गया।मामले को लेकर मौजूदा स्थिति स्पष्ट नहीं है।

तिब्बती बहनों की अचानक गिरफ्तारी

एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, परम पावन दलाई लामा की तस्वीर घर में रखने में बहन जुमकर की सहायता करने के लिए ११ जुलाई को एक तिब्बती महिला को नागचू के अमदो काउंटी (चीनी: एंडुओ) से गिरफ्तार किया गया था।
परम पावन दलाई लामा की तस्वीर रखने के आरोप में चीनी अधिकारियों द्वारा २३ जून को ज़ुमकर की गिरफ्तारी के बाद ११ जुलाई को उनकी छोटी बहन यूडॉन को भी गिरफ्तार किया गया था। बताया जा रहा है कि यूडॉन को ल्हासा के एक हिरासत केंद्र में रखा गया है। इसके अलावा दोनों बहनों के बारे में अन्य किसी प्रकार की कोई जानकारी नहीं है।
लगभग २० वर्ष की यूडॉन तथाकथित तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) के नागचू (चीनी: नैकू) प्रिफेक्चर के अम्दो काउंटी के ज़ारंग (चीनी: ज़रेन) बस्ती से है। बहुत छोटी उम्र से ही वह और उसकी २७ वर्षीय बड़ी बहन ज़ुमकर एक खानाबदोश परिवार में पली-बढ़ी हैं।
इस वर्ष मई से असंतोष के संकेत मिलने के बाद से चीनी सरकार ने ल्हासा और आसपास के तिब्बती क्षेत्रों में और आसपास के तिब्बतियों और पर्यटकों की निगरानी तेज कर दी है। इसमें फोन और घरों की तलाशी, जैसे कि परम पावन दलाई लामा की तस्वीरें रखना और निर्वासित तिब्बतियों के साथ संपर्क बनाए रखना भी शामिल है। तिब्बती बच्चों और पार्टी के सदस्यों को धार्मिक कार्यक्रम में भाग लेने या धार्मिक शिक्षा सत्रों में भाग लेने के लिए मठों में प्रवेश करने पर मनाही है।
इसके अलावा, चीनी अधिकारियों ने परम पावन दलाई लामा की जयंती से पहले के दिनों में तिब्बती लोगों पर अपनी निगरानी बढ़ा दी। इसमें यह सुनिश्चित की जा रही है कि कोई भी तिब्बती अपने धर्मगुरु के प्रति श्रद्धा न दिखा पाए। श्रद्धा दिखाने वाले तिब्बतियों को ऐसा करते पाए जाने पर कड़ी सजा दी जाती है।

• दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन पर तिब्बतियों पर चीन की कड़ी निगरानी

(नेपाल ने काठमांडू के बाहर एक शरणार्थी शिविर में तिब्बतियों को दो घंटे समारोह करने की अनुमति दी)
Rfa.org / सांग्याल कुंचोक, ०६ जुलाई २०२२

कड़ी निगरानी मे दलाई लामा के ८७वां जन्मदिन मनाते परम पावन के अनुयायी।

तिब्बतियों के निर्वासित आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन के अवसर पर बुधवार को चीन ने कड़ी सुरक्षा रखी और ऑनलाइन निगरानी की।तिब्बतियों ने इस अवसर पर कड़ी धूप और पिकनिक का लुत्फ उठाया।

पिछले वर्षों में ०६ जुलाई को जन्मदिन के आसपास के हफ्तों में बड़ी संख्या में तिब्बतियों को गिरफ्तार किया जाता रहा है। इस वर्ष तिब्बत के ल्हासा और चीनी प्रांतों के तिब्बती क्षेत्रों में आबादी वाले इलाकों में कड़ी सुरक्षा-व्यवस्था रखी गई है।

क्षेत्र के एक तिब्बती ने सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर कहा, 'चीनी अधिकारियों द्वारा परम पावन दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन के उत्सव पर रोक के बावजूद तिब्बत के अंदर तिब्बतीया तो गुप्त रुप से या खुले तौर पर वर्षगांठ मनाने के तरीके खोज रहे हैं।'
सूत्र ने कहा, '०६ जुलाई को कई तिब्बती अपने-अपने क्षेत्रों में पहाड़ियों की चोटी पर सांगसो अगरबत्ती चढ़ा रहे हैं और अन्य स्थानों पर भी तिब्बती पिकनिक मनाकर इस दिन को मना रहे हैं।'

सूत्र ने कहा कि इस साल कड़ी सुरक्षा के बावजूद,'तिब्बत के अंदर तिब्बती इस अवसर पर परम पावन दलाई लामा की प्रशंसा में निबंध और लेख लिखते हैं।' उन्होंने कहाकि लेख सोशल मीडिया पर व्यापक रुप से पढ़े और प्रसारित किए जाते हैं।'

एक अन्य सूत्र ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में चीनी अधिकारियों ने तिब्बतियों को किसी भी प्रकार की तस्वीरें प्रसारित नहीं करने की चेतावनी देने के लिए सभी को बैठकों में भाग लेने के लिए कहा और उन्हें बताया कि उनके सेलफोन में प्रतिबंधित सामग्री की जांच की जाएगी।
दूसरे सूत्र ने कहा, 'कई जगहों पर नए चेकपॉइंट बनाए गए हैं जो सभी यात्रियों की जांच करते हैं और परिवार की गतिविधियों की जासूसी करने के लिए पुलिस इकाइयां स्थापित की गई हैं।'
क्षेत्रीय राजधानी ल्हासा में एक सूत्र ने कहा,'हाल के दिनों में ल्हासा के पोटाला पैलेस और त्सुलंगखांग मंदिर में आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या को अत्यधिक प्रतिबंधित और सीमित कर दिया गया है। बड़ी सार्वजनिक सभाओं से बचने के लिए रोज केवल एक निश्चित संख्या में आगंतुकों को अनुमति दी जाती है।'
पिछले साल आरएफएने दलाई लामा के ८६वें जन्मदिन के समय के आसपास २०-३० तिब्बतियों की गिरफ्तारी की सूचना दी थी। लेकिन इस साल हिरासत या गिरफ्तारी की कोई बात सामने नहीं आई है।
तिब्बत की सीमा से लगे नेपाल की सरकार ने राजधानी काठमांडू के पास ६० साल पुरानी और १००० से अधिक तिब्बती घरों वाली ज्वालाखेल तिब्बती बस्ती में दलाई लामा का ८७वां जन्मदिन मनाने के लिए केवल दो घंटे के जश्न की अनुमति दी।
उत्सव में भाग लेने वाले एक स्थानीय तिब्बती ने कहा,'कई पश्चिमी दूतावासों के गणमान्य हस्तियों की उपस्थिति में समारोह में दो घंटे से अधिक समय लग गया।'
स्थानीय मीडिया ने बताया कि फ्रांस, यूरोपीय संघ, जापान और अमेरिका के दूतावासों के राजनयिक इस तिब्बती बस्ती में आनेवाले विदेशी मेहमानों में शामिल थे।
स्थानीय सूत्र ने कहा, 'इस साल नेपाली सरकार ने अनुमति दी और बड़ी संख्या में तिब्बतियों ने इस समारोह को मनाया।'
नेपाली सूत्र ने कहा, 'नेपाली पुलिस को आयोजन स्थलों पर तैनात किया गया था, लेकिन वे सिर्फ निगरानी रख रहे थे और समारोहों को बाधित नहीं कर रहे थे। समारोह में दलाई लामा के चित्र, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के आधिकारिक भाषण, सांस्कृतिक प्रदर्शन आदि का आयोजन हुआ।'
नेपाल ने पिछले वर्षों में दलाई लामा के प्रति सम्मान प्रकट करनेवाले ऐसे किसी भी सार्वजनिक प्रदर्शनों पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसका कारण यह था कि नेपाल की तत्कालीन सरकार अपने शक्तिशाली पड़ोसी चीन को खुश करने की कोशिश कर रहा था। क्योंकी चीन परम पावन जैसे लोकप्रिय नेता को अलगाववादी कहकर बदनाम करता रहता है।
दलाई लामा १९५९ में चीनी शासन के खिलाफ असफल तिब्बती राष्ट्रीय विद्रोह के बीच तिब्बत से निर्वासन में भारत भाग गए। चीन ने १९५० में ही स्वतंत्र हिमालयी देश तिब्बत पर कब्जा कर लिया था।
तिब्बतियों को दलाई लामा की तस्वीर रखने, उनके जन्मदिन के सार्वजनिक समारोह मनाने और मोबाइल फोन या अन्य सोशल मीडिया के माध्यम से उनकी शिक्षाओं को प्रसारित करने पर अक्सर कठोर दंड दिया जाता है।
चीनी अधिकारियों ने तिब्बत और पश्चिमी चीन के तिब्बती आबादी वाले क्षेत्रों पर अपनी कड़ी पकड़ बनाए रखी, तिब्बतियों की राजनीतिक गतिविधियों और सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान की शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति को प्रतिबंधित कियाऔर तिब्बतियों को बिना केस चलाए कारावास में डाला, यातनाएं दीं और उनकी न्यायेतर हत्या तक करते रहे हैं।
दलाई लामा के जन्मदिन का सम्मान करते हुए एक बयान में अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने परम पावन की 'तिब्बती समुदाय की शिकायतों को हल करने के लिए अहिंसा के लिए जारी प्रतिबद्धता' और उनकी 'मानवता के लिए समर्पण और सेवा' की भावना के लिए प्रशंसा की।
ब्लिंकन ने कहा, 'अमेरिका परम पावन और तिब्बती समुदाय के तिब्बत की विशिष्ट भाषाई, धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने के प्रयासों का समर्थन करना जारी रखेगा, जिसमें उनके स्वतंत्र रुप से अपने धार्मिक गुरुओं को चुनने का अधिकार भी शामिल है।'

• सम्मानित पूर्व तिब्बती राजनीतिक कैदी जिग्मे ग्यात्सो की चीनी उत्पीड़न से ५६ वर्ष की आयु में निधन

Tibet.net,०५ जुलाई २०२

धर्मशाला। चीनी सरकार के दमन के खिलाफ तिब्बत और तिब्बतियों के अधिकारों के लिए दृढ़ता और साहस के साथ खड़े होने वाले पूर्व तिब्बती राजनीतिक कैदी जिग्मे ग्यात्सो का ०२जुलाई २०२२को उनके आवास पर निधन हो गया। यह जानकारी एक विश्वसनीय स्रोत ने दी। उनकी मृत्यु उन तिब्बतियों की लंबी सूची में नवीनतम है जो यातना, चिकित्सा उपचार से इनकार, न्यायेतर हत्या और जबरन गायब कर मारे गए हैं।

जिग्मे ग्यात्सो।

लाब्रांग मठ के जिग्मे ग्यात्सो, जिन्हें लोकप्रिय रुप से जिग्मे गोरिल के रुप

में जाना जाता है, का पारंपरिक अम्दो प्रांत के कनल्हो (चीनी: गन्नन) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर में उनके निवास पर निधन हो गया। स्रोत के अनुसार, मौत का कारण अज्ञात है, हालांकि २०१६ में जेल से रिहा होने के बाद से उनका स्वास्थ्य बहुत खराब चल रहा था।

अन्य मीडिया रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि जिग्मे बच सकते थे, यदि चीनी सरकार ने उन्हें और उनके परिवार को जेल में यातना दिए जाने के कारण होने वाली चोटों से उबरने के लिए सही समय पर आपातकालीन चिकित्सा उपचार से वंचित नहीं किया होता।

मई में उनका स्वास्थ्य बिगड़ना शुरू हो गयाऔर उन्हें बिना किसी सफलता के लंबी अवधि के लिए किंघई प्रांत के ज़िनिंग में एक चिकित्सा केंद्र में भर्ती करा दिया गया। निर्वासित मीडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, ग्यात्सो के बारे में जानकारी को दबाने के चीनी सरकार के प्रयासों के कारण उनके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करना कठिन होता जा रहा है, जिस में एक हालिया तस्वीर भी शामिल है।

जिग्मे ग्यात्सो २००९के एक वीडियो में चीनी अधिकारियों द्वारा किए गए क्रूर दमन के खिलाफ गवाही देने के बाद लोगों की निगाह में आए। इस गवाही को इंटरनेट पर व्यापक रूप से प्रसारित किया गया था। वीडियो में, उन्होंने लगातार अमानवीय पिटाई, बार-बार अस्पताल में भर्ती होने, कई दिनों तक भोजन और पानी से अलग कर दिए जाने, जबरन कबूलनामे और जेल के मरनासन्न कर देनेवाले माहौल में पूछताछ के अपने कष्टों को उजागर किया था।

भारत में परम पावन दलाई लामा द्वारा आयोजित एक धार्मिक समारोह में भाग लेकर लाबरांग मठ लौटने के बाद ग्यात्सो को पहली बार २००६ में हिरासत में लिया गया था। हालांकि, जब २००८ में चीनी अधिकारियों द्वारा आयोजित एक मीडिया टूर के दौरान अभूतपूर्व विरोध- प्रदर्शन हुआतो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें विरोधियों का सरगना मानकर पुलिस हिरासत में बुरी तरह पीटा गया और एक साल बाद बिना किसी औपचारिक मुकदमा चलाए ही रिहा कर दिया गया। हिरासत में उनकी मृत्यु न हो जाए, इसी प्रयास में जिग्मे ग्यात्सो को तुरंत रिहा कर दिया गया। हालांकि यह नजरबंदी उनके लिए घातक साबित हुई।

२०१० में उन्हें फिर से गिरफ्तार किया गया और रिहा होने से पहले 'राजनीतिक पुन: शिक्षा' के लिए उन्हें फिर से बिना किसी आरोप के छह महीने के लिए एक होटल में रखा गया। उन्हें आखिरी बार २०११ में हिरासत में लिया गया। इस बार उन्हें गांसु में कनल्हो पीपुल्स इंटरमीडिएट कोर्ट ने 'राष्ट्र को विभाजित करने' का दोष सिद्ध होने पर पांच साल जेल की सजा सुनाई थी। २६ अक्तूबर २०१६ को उनकी रिहाई के बाद चीनी अधिकारियों ने उनके परिवार को स्वागत समारोह आयोजित नहीं करने की चेतावनी दी। इसके अलावा, ग्यात्सो को सलाह दी गई थी कि वह कभी भी भिक्षु के चीवर न पहनें और मठ में कभी न लौटें।

वह आमदो पारंपरिक तिब्बती प्रांत में गांसु प्रांत के कन्ल्हो तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के सांगचु काउंटी के लाब्रांग शहर के रहने वाले थे।

चीनी अधिकारियों द्वारा तिब्बती कैदियों को जेल की सजा काटने के दौरान ही नियमित रूप से अमानवीय यातना और दण्ड शर्तों की परवाह किए बिना ही दी जाती है। इस तरह की कार्रवाइयां अंतरराष्ट्रीय कानून और संधियों द्वारा अवैध घोषित की जा चुकी हैं। उन में से एक कानून है- कन्वेंशन अगेंस्ट टॉर्चर, जिसे लागू करने के लिए चीन बाध्य है। लेकिन इसके बावजूद यातना के परिणामस्वरूप अक्सर तिब्बती कैदी भयानक चोटों और कभी-कभी मृत्यु को भी प्राप्त होते हैं। २००८में चीनी शासन के खिलाफ राष्ट्रव्यापी विद्रोह के बाद से तिब्बत के अंदर तिब्बतियों की यातना से संबंधित मौतों के कम से कम ५०ज्ञात मामले हैं।

तिब्बती उद्यमी और परोपकारी व्यक्ति को अन्यायपूर्ण तरीके से १८ साल कैद की सजा

Tibet.net, २८ जुलाई २०२२

तेनज़िन चोफेल।

धर्मशाला। एक विश्वसनीय स्रोत की रिपोर्ट है कि चीनी अधिकारियों ने तथाकथित तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) के नागचू (चीनी : नागचू) शहर के सेर्नेय (चीनी : सेनी) जिले में 'अलगाववाद को उकसाने' के आरोपों में तेनज़िन चोफेल को १८ साल की जेल की सजा सुनाई है। ४५ वर्षीय तिब्बती उद्यमी पर 'अवैध रूप से विदेशों में खुफिया जानकारी भेजने' और 'राज्य की सुरक्षा को खतरे में डालने वाली गतिविधियों को वित्तपोषित करने' का भी झूठा आरोप लगाया गया था।

चोफेल को शुरू में ३० मार्च २०१८ को गिरफ्तार किया गया था।२४ मई २०१९ को उन्हें आधिकारिक तौर पर १८ साल की निश्चित कारावास की सजा और पांच साल तक राजनीतिक अधिकारों से वंचित करने की सजा सुनाए जाने तक तनहाई कैद में रखा गया था। सूत्र का कहना है कि चीनी अधिकारियों ने उनकी सभी निजी संपत्ति को जब्त कर लिया है और उन्हें वर्तमान में ल्हासा के चुशूर (चीनी: कुशुई) जेल में रखा गया है।

चोफेल पर अनुचित फैसले के बाद तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र उच्च पीपुल्स कोर्ट ने अक्तूबर २०१९ में उनके परिवार की अपील को खारिज कर दिया।

तिब्बती सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स एंड डेमोक्रेसी की एक पूर्व रिपोर्ट में चोफेल को चेंगदू की एक सफल व्यावसायिक यात्रा से लौटने के बाद ल्हासा के गोंगकर हवाई अड्डे पर हिरासत में लिए जाने की सूचना मिली थी। वह तिब्बती संस्कृति और पर्यावरण की रक्षा करने, तिब्बतियों के बीच एकता की भावना को बढ़ावा देने और गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करने सहित विभिन्न परोपकारी और सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल रहे हैं।

चोफेल की कैद तिब्बतियों के पर्यावरण और सांस्कृतिक खजाने की रक्षा के लिए विनाशकारी विकास परियोजनाओं का विरोध करने वालों को निरंतर उत्पीडित किए जाने का एक और उदाहरण है। इसके अलावा, यह समुदाय के नेताओं, बुद्धिजीवियों, अधिकार रक्षकों और लेखकों सहित प्रमुख तिब्बतियों पर हमला करके चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ असंतोष को कुचलने के लिए चीन के सुनियोजित प्रयास का हिस्सा भी है।

• 'गैरकानूनी' वीचैट समूह बनाने के आरोप में तिब्बती गिरफ्तार

निर्वासन में एक सूत्र का कहना है कि समूह तिब्बती धार्मिक नेताओं के जन्मदिन मनाने के लिए बनाया गया था।

Rfa.org, सांग्याल कुंचोक, ०२जुलाई २०२२

तिब्बती सूत्रों का कहना है कि चीनी अधिकारियों ने इस महीने सिचुआन के

एक तिब्बती आबादी वाले इलाके में लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'वीचैट' पर तिब्बती धार्मिक नेताओं का सम्मान करने वाला एक समूह स्थापित करने के आरोप में एक तिब्बती व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया है। निर्वासन में रह रहे एक तिब्बती ने इस सप्ताह आरएफए को बताया कि कार्दजे (चीनी: गांजी) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के सिचुआन के सेर्शुल (चीनी:शिकू) काउंटी में रहने वाले ५७ वर्षीय लोत्से को चैट समूह बनाने के लिए जुलाई में हिरासत में लिया गया था। यह चैट समूह श्रद्धेय तिब्बती लामाओं का जन्मदिन मनाने के लिए निर्मित किया गया था।

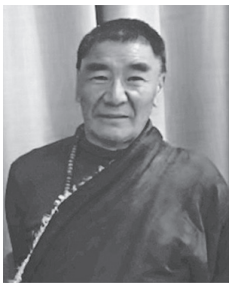

लोत्से।

स्थानीय संपर्कों का हवाला देते हुए और सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर आरएफए के सूत्र ने कहा, 'समूह में लगभग १०० सदस्य हैं जो तिब्बत के सभी हिस्सों से आते हैं।'

सूत्र ने बताया कि चीनी अधिकारियों ने लोत्से द्वारा समूह के निर्माण को 'गैरकानूनी' करार दिया गया है।

सूत्र ने कहा कि दो पुत्रों के एकल पिता लोत्से को माना जा रहा है कि अब अधिकारियों ने सेर्शुल में कहीं हिरासत में रखा हुआ है। स्थानीय तिब्बतियों से उसके बारे में पूछताछ की गई और उसकी गिरफ्तारी से पहले स्थानीय लोगों पर पुलिस द्वारा दबाव डाला गया।
उन्होंने कहा, 'चीनी पुलिस भी गिरफ्तारी से पहले उसके घर गई थी और सरकार की अनुमति के बिना ऐसा समूह बनाने के लिए उसे धमकी दी थी।'

प्रतिबंधित जन्मदिन समारोह
सूत्रों ने आरएफए को पहले की रिपोर्टों में बताया कि सिचुआन के अधिकारियों ने २०२१ में ०६ जुलाई को निर्वासित आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा का ८६वां जन्मदिन मनाने पर दो तिब्बतियों को गिरफ्तार किया था।

कर्ज़ेज़ के कायागलुंग शहर में एक सोशल मीडिया समूह का हिस्सा होने के संदेह में उम्र के चौथे दशक में चल रहे दंपति- कुंचोक ताशी और श्रीमती दज़ापो को हिरासत में लिया गया था। इन दोनों पति-पत्नी ने सोशल मीडिया पर दलाई लामा के जन्मदिन से संबंधित तस्वीरों और दस्तावेजों को प्रसारित किया और तिब्बती प्रार्थनाओं को पढ़ने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया।

दलाई लामा १९५९ में चीनी शासन के खिलाफ असफल तिब्बती राष्ट्रीय विद्रोह के बीच तिब्बत से निर्वासन में भारत भाग गए। चीन ने १९५० में ही स्वतंत्र हिमालयी देश तिब्बत पर कब्जा कर लिया था।

तिब्बतियों को दलाई लामा की तस्वीर रखने, उनके जन्मदिन के सार्वजनिक समारोह मनानेऔर मोबाइल फोन या अन्य सोशल मीडिया के माध्यम से उनकी शिक्षाओं को प्रसारित करने पर अक्सर कठोर दंड दिया जाता है।

चीनी अधिकारियों ने तिब्बत और पश्चिमी चीन के तिब्बती आबादी वाले क्षेत्रों पर अपनी कड़ी पकड़ बनाए रखी, तिब्बतियों की राजनीतिक गतिविधियों और सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान की शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति को प्रतिबंधित कियाऔर तिब्बतियों को बिना केस चलाए कारावास में डाला, यातनाएं दीं और उनकी न्यायेतर हत्या तक करते रहे हैं।

• आदरणीय ज़ीक्याब रिनपोछे ने चेक के उप प्रधानमंत्री से मुलाकात की

Tibet.net,१५ जुलाई २०२२

ब्रुसेल्स। जेत्सुन तेनज़िन गेधुन येशी त्रिनले फुंतसोक पेलसांगपो, आदरणीय ज़ीक्याब रिनपोछे ने ११वें पंचेन लामा की रिहाई के लिए अपने समर्थन अभियान की कड़ी में चेक उप प्रधानमंत्री महामहिम इवान बार्टोस सेडिजिटलीकरण के संदर्भ में बातचीत के लिए मुलाकात की। इवान बार्टोस पेट्र फियाला के मंत्रिमंडल में क्षेत्रीय विकास मंत्री का कार्यभार भी संभाल रहे हैं।

ज़ीक्याब रिनपोछे और चेक गणराज्य के उप प्रधानमंत्री मिकुलस पेक्सा।

आदरणीय ज़ीक्याब रिनपोछे ने अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालने और ११वें पंचेन लामा के जबरन गायब कर दिए जाने के मामले को सुनने के लिए उप प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया। परम पावन दलाई लामा और दिवंगत राष्ट्रपति वेक्लेव हावेल के विशेष संबंधों को याद करते हुए रिनपोछे ने उप प्रधानमंत्री के समक्ष अपनी पांच सूत्रीय अपील को यूरोपीय परिषद स्तर पर या राष्ट्रीय सरकार के स्तर पर विचार करने के लिए रखा। चेक गणराज्य वर्तमान में परिषद का अध्यक्ष है।

उप प्रधानमंत्री ने रिनपोछे की प्रस्तुति को बहुत सहानुभूति और ध्यान से सुना। उन्होंने रिनपोछे को यूक्रेन संकट के संदर्भ में बदलती विश्व व्यवस्था और चीन के प्रति यूरोप की बदलती धारणा के बारे में जानकारी दी। इसके बाद उन्होंने चेक प्रेसीडेंसी के आदर्श वाक्य को साझा किया, जो पूर्व राष्ट्रपति वेक्लेव हावेल से ही लिया गया उद्धरण है – 'यूरोप एक टास्क है'। उन्होंने मामले को बारीकी से देखने और जो भी संभव होगा वह करने का वादा किया।

इस अवसर का लाभ उठाते हुए प्रतिनिधि रिगज़िन जेनखांग और सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग में तिब्बत एडवोकेसी अनुभाग की प्रमुख सुश्री दुक्थेन की ने उप प्रधानमंत्री को वर्तमान कशाग की ई-गवर्नेंस पहल और ई-गवर्नेंस और डिजिटलीकरण का अध्ययन करने के लिए सीटीए कर्मचारियों की एस्टोनिया यात्रा की जानकारी दी।

उप प्रधानमंत्री यूरोपीय संसद में चेक प्रेसीडेंसी के डिजिटल क्षेत्र की प्राथमिकताओं को प्रस्तुत करने के लिए ब्रुसेल्स में थे।
बैठक को यूरोपीय संसद में टीआईजी के अध्यक्ष मिकुलस पेक्सा के कार्यालय द्वारा सुगम बनाया गया था।

• पूरे भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने परम पावन १४वें दलाई लामा की ८७वीं जयंती मनाई

Tibet.net, ११ जुलाई २०२२

नई दिल्ली। भारत भर में फैले तिब्बत समर्थक समूहों (टीएसजी) ने ०६ जुलाई, २०२२को परम पावन १४वें दलाई लामा की ८७वीं जयंती मनाई। इस शुभ अवसर पर टीएसजी ने देश के विभिन्न हिस्सों में परम पावन १४वें दलाई लामा के जीवन का संदेश और उनकी स्वस्थ जीवन के साथ दीर्घायू होने की प्रार्थना करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों और गतिविधियों का आयोजन किया।

परम पवन दलाई लामा जी का ८७वां जन्मदिन मनाते तिब्बत समर्थक समूहों के सदस्य।

झारखंड के हजारीबाग में भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) ने आईटीएफएस हजारीबाग के अध्यक्ष श्री सुदेश कुमार चंद्रवंशी के नेतृत्व में बड़ा बाजार स्थित जैन भवन में परम पावन १४वें दलाई लामा का ८७वां जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया। समारोह में पूर्व सांसद महावीर लाल विश्वकर्मा, हजारीबाग सदर विधायक मनीष जायसवाल, विनोबा भावे विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर बंसीधर रुखैयर, हजारीबाग नगर निगम की महापौर रोशनी तिर्की, डॉ. वी.के. सिंह, डॉ. ललिता राणा, प्रोफेसर जटाधर दुबे सहित सैकड़ों लोग शामिल हुए। बिहार के मुजफ्फरपुर में आईटीएफएस ने इस अवसर पर ललित नारायण मिश्रा बिजनेस मैनेजमेंट कॉलेज, मुजफ्फरपुर में 'परम पावन १४वें दलाई लामा के समक्ष चुनौतियां' विषय पर एक चर्चा का आयोजन किया। इस अवसर पर विस्तृत चर्चा के बाद तीन प्रस्ताव पारित किए गए- पहला, परम पावन १४वें दलाई लामा की लंबी आयु की कामना; दूसरा, परम पावन १४वें दलाई लामा को भारतीय संसद को संबोधित करने देने की मांगऔर तीसरा, परम पावन १४वें दलाई लामा को भारत रत्न प्रदान करना। कार्यक्रम में शिक्षाविद् कृष्णकांत, जिला लोक अभियोजक प्रमोद शाही, भारत-तिब्बत मैत्री संघ के बिहार चैप्टर के कार्यकारी अध्यक्ष हरेंद्र कुमार, गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के पूर्व सचिव सुरेंद्र कुमार और जिलाध्यक्ष डॉ. विकास नारायण उपाध्याय ने कार्यक्रम में प्रमुख रुप से भाग लिया। भारत-तिब्बत मैत्री संघ ने बिहार के सीतामढ़ी, गुजरात के अहमदाबाद और सौराष्ट्र, राजस्थान के जोधपुर, महाराष्ट्र के भंडारा और कर्नाटक के बेंगलुरु और मैसूर में भी परम पावन १४वें दलाई लामा का ८७वां जन्मदिन मनाया।

भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) ने परम पावन दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन की पूर्व संध्या पर परम पावन दलाई लामा के जीवन और योगदान का जश्न मनाते हुए एक फेसबुक लाइव वेबिनार का आयोजन किया। इस अवसर पर आरएसएस के वरिष्ठ नेता और बीटीएसएम के संरक्षक श्री इंद्रेश कुमार मुख्य वक्ता थे, जबकि सीटीए के सुरक्षा विभाग के कालोन ग्यारी डोल्मा, सुभारती विश्वविद्यालय में बौद्ध विभाग के विभागाध्यक्ष भंते चंद्रकृति और बीटीएसएम के राष्ट्रीय महासचिव श्री पंकज गोयल अन्य विशिष्ट वक्ता थे। वेबिनार की अध्यक्षता बीटीएसएम के कार्यकारी अध्यक्ष श्री हरजीत सिंह ग्रेवाल ने की। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद मेंबीटीएसएम इकाई ने परम पावन १४वें दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन को जलाभिषेक करके मनाया। इस अवसर परपूरी इकाई ने परम पावन १४वें दलाई लामा के दीर्घ और स्वस्थ जीवन की कामना की। उन्होंने कैलाश-मानसरोवर की मुक्ति और तिब्बत की स्वतंत्रता के लिए भी प्रार्थना की।

कानपुर में बीटीएसएम ने परम पावन दलाई लामा जी की ८७वीं जयंती ओम गेस्ट हाउस में बहुत धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रांतीय अध्यक्ष एडवोकेट अतुल निगम जी ने की। दिल्ली के केशवपुरम में बीटीएसएमने परम पावन दलाई लामा की जयंती मनाई। इस अवसर पर केशवपुरम जिले के सदस्यों ने परम पावन दलाई लामा के चित्र के सामने माल्यार्पण किया और देशी घी का दीपक जलाकर परम पावन दलाई लामा के अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायू होने के लिए भगवान से प्रार्थना की। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष श्री भूपेंद्र गोयल जी, जिला महासचिव श्री मंजीत जी एवं विनय गुप्ता जी, विश्व हिन्दू परिषद जिला सह मंत्री श्री आशु सिंघल जी, महिला विभाग की प्रदेश महासचिव श्रीमती वीणा गुप्ता जी, श्री कैलाश कान जी, वीणा सिंघल जी आदि कार्यकर्ता मौजूद थे। बीटीएसएम ने महाराष्ट्र के देवगिरी प्रांत, उत्तर प्रदेश के अवध प्रांत, मुरादाबाद और मेरठ, राजस्थान के जयपुर, बिहार के पटना, छत्तीसगढ़ के रायपुर, उत्तराखंड के देहरादून, केंद्रशासित प्रदेश चंडीगढ़ और हरियाणा के कैथल में भी परम पावन दलाई लामा जी का ८७वां जन्मदिन मनाया। इन इकाइयों ने इस अवसर पर वृक्षारोपण, मिठाई वितरण, १००० दीप प्रज्ज्वलन, संगोष्ठियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसी विभिन्न गतिविधियों को अंजाम दिया।

'फ्री तिब्बत- ए वॉयस फ्रॉम असम' ने ०३ जुलाई, २०२२से डिब्रूगढ़, असम से परम पावन को एक विशेष दीर्घायु प्रार्थना-सभा के साथ शुरू हुए परम पावन के ८७वें जन्मदिन समारोह के क्रम में गुवाहाटी में एक संवाददाता सम्मेलन का आयोजन किया। यह विशेष प्रार्थना-सभा बुद्ध चेतना द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय ब्रदरहुड मिशन, डिब्रूगढ़' और 'फ्री तिब्बत- ए वॉयस फ्रॉम असम' के सहयोग से आयोजित की गई थी। प्रेस कांफ्रेंस को कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के पूर्वोत्तर भारत के क्षेत्रीय संयोजक और फ्री तिब्बत- ए वॉयस फ्रॉम असम के अध्यक्ष श्री सौम्यदीप दत्ता, प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता प श्री अजय दत्ता और शिक्षाविद तथा लेखक डॉ जगदींद्र रायचौधरी ने संबोधित किया और परम पावन दलाई लामा को जन्मदिन की बधाई और प्रार्थना के साथ-साथ भारत के प्रधानमंत्री से परम पावन को बिना किसी देरी के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार- भारत रत्न प्रदान करने की जोरदार अपील की।

श्री सोनम लुंडुप लामा के नेतृत्व में हिमालयन कमेटी फॉर एक्शन ऑन तिब्बत (हिमकैट) ने पश्चिम बंगाल के सालुगुरा मठ में छात्रों और कर्मचारियों के साथ इस अवसर को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया।

दिल्ली में भारत-तिब्बत समन्वय संघ ने मजनुं का टीला तिब्बती कॉलोनी

में आधिकारिक कार्यक्रम में भाग लेकर इस अवसर को मनाया जहां उन्होंने स्कूली बच्चों को मिष्टान्न वितरण भी किया।
कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक आर.के. खिरमे ने अरुणाचल प्रदेश के बोमडिलामें परम पावन १४वें दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन समारोह में भाग लिया। इसी तरह कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक पेमा वांगदा भूटिया ने गंगटोक में सिक्किम के मुख्यमंत्री एस. तमांग की उपस्थिति में इस अवसर को मनाया।क्षेत्रीय संयोजक ऋषि वालिया ने हिमाचल प्रदेश के मैकलोडगंज में,क्षेत्रीय संयोजक फुंतसोक लद्दाखी ने दिल्ली में और अन्य सदस्यों ने अपने-अपने स्थानों पर इस कार्यक्रम का आयोजन किया, जहां उन्होंने परम पावन १४वें दलाई लामा को शुभकामनाएं दीं और हम सभी को प्रेम, शांति, करुणा, दया, अहिंसा और मानवता की बेहतर भलाई का उपदेश देने के लिए उनके लंबे और स्वस्थ जीवन के लिए प्रार्थना की।

• अमेरिकी प्रतिनिधि माइकल मैककॉल और जिम मैकगवर्न ने तिब्बत-चीन संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान को बढ़ावा देने के लिए विधेयक पेश किया

Gop-foreignaffairs.house.gov, १३ जुलाई २०२२

वाशिंगटनडीसी। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष रिपब्लिकन माइकल मैककॉल (टेक्सास) और चीन पर कांग्रेस-कार्यकारी आयोग के सह-अध्यक्ष जिम मैकगवर्न (डेमोक्रेट-मैसाच्यूचेस्ट्स) ने तिब्बत और पीआरसी के बीच संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान को बढ़ावा देने के लिए पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) और दलाई लामा के दूतों के बीच शांति की दिशा में बातचीत को आगे बढ़ाने वाली नीति को मजबूत करने के लिए एक विधेयक पेश किया।

अमेरिकी सांसद जिम मैकगवर्न और माइकल मैककॉल।

'प्रोमोटिंग ए रिजोल्यूशन टू द तिब्बत-चाइना कंफ्लिक्ट ऐक्ट (तिब्बत-चीन संघर्ष समाधान को बढ़ावा देने के लिए अधिनियम)' संवाद को बढ़ावा देने की अमेरिका की इस दीर्घकालिक द्विदलीय नीति को सुनिश्चित करना चाहता है कि अमेरिकी नीति अंतरराष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों पर आधारित है। यह अधिनियम तिब्बत-चीन के बीच संघर्ष की प्रकृति को सटीक रूप से दर्शाती है। इस अधिनियम के तहत पीआरसी अधिकारियों और दलाई लामा या उनके प्रतिनिधियों के बीच बातचीत शुरू करने का प्रयास किया गया है। असल में,२०१० के बाद से कोई औपचारिक बातचीत नहीं हुई है और चीनी अधिकारी आगे की बातचीत शुरू करने के लिए शर्त के रूप में दलाई लामा से अनुचित मांग करना जारी रखे हुए हैं।

प्रतिनिधि मैककॉल ने कहा,'तिब्बत पर १९५० में चीनी आक्रमण और अब तक तिब्बतियों पर चल रहे उसके दमन ने सीसीपी की क्षेत्रीय आक्रामकता और मानवाधिकारों के हनन के लिए मंच तैयार करने का काम किया है। लोगों की स्वतंत्रता का हरण करने और इतिहास को फिर से लिखने के उनके कुत्सित प्रयास आज भी अमेरिकी मूल्यों और हमारे राष्ट्रीय सुरक्षा हितों के लिए खतरा हैं। यह द्विदलीय विधेयक यह सुनिश्चित करने में मदद करेगा कि तिब्बतियों को अपने भविष्य को सुनिश्चित करने और अपनी बात कहने का पूरा अधिकार है। साथ ही इससे सीसीपी के इस झूठ को खारिज करने में मदद मिलेगी कि तिब्बत पर उनका अतिक्रमण ऐतिहासिक रूप से वैध है।'

प्रतिनिधि मैकगवर्न ने कहा, 'तिब्बत और चीन के बीच संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान में कांग्रेस की लंबी और स्थायी रुचि रही है। अमेरिकी सरकार ने बिना किसी पूर्व शर्त के चीनी अधिकारियों से बातचीत पर लौटने का लगातार आह्वान किया है। लेकिन यह काम नहीं किया गया है। चीनी दलाई लामा के साथ बातचीत करने से मुंह फेर रहे हैं। हमारा द्विदलीय कानून दोनों पक्षों को स्थायी समाधान के लिए बातचीत करने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय कानून को आधार बनाकर अमेरिकी नीति को मजबूत करने का प्रयास करता है। साथ ही यह चीनी दुष्प्रचार का मुकाबला करनेवाला है।

बिल के दो मुख्य घटक हैं:

यह नीति बनाकर बातचीत के लिए अमेरिकी समर्थन के इस आधार को मजबूत करता है कि तिब्बती लोग अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत आत्मनिर्णय के अधिकार के हकदार हैं और इस अधिकार का प्रयोग करने की उनकी क्षमता वर्तमान पीआरसी नीतियों से अलग है। दूसरे, यह कि तिब्बत और पीआरसी के बीच संघर्ष अनसुलझा है और तिब्बत की कानूनी स्थिति का निर्धारण अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार किया जाना बाकी है।
यह विदेश मंत्रालय में तिब्बत मुद्दों के लिए तैनात विशेष समन्वयक को तिब्बत के बारे में चीनी सरकार द्वारा फैलाई जा रही गलत सूचना का प्रतिकार सुनिश्चित करने का निर्देश देता है। साथ ही उसे पीआरसी के अधिकारियों द्वारा फैलाई गई झूठी सूचनाओं को अमेरिकी सरकार के बयान और दस्तावेज़ के माध्यम से उजागर करने को सुनिश्चित करने को कहता है। यह तिब्बत के इतिहास, तिब्बती लोगों और दलाई लामा समेत तिब्बती संस्थानों के खिलाफ चीनी सरकार के दुष्प्रचारों को मुकाबला करने का अधिकार प्रदान करता है। यह कानून तिब्बत के बारे में दुष्प्रचार का मुकाबला करने के लिए २०१८ के एशिया रिअस्योरेंस इनिशिएटिव ऐक्ट के तहत मौजूदा फंडिंग को अधिकृत करता है और तिब्बत के बारे किए जा रहे दुष्प्रचारों का मुकाबला करने से संबंधित कार्यकारी शाखा की गतिविधियों पर सालाना 'तिब्बत वार्ता रिपोर्ट' कांग्रेस में पेश करना सुनिश्चित करता है।

• निर्वासित तिब्बती संसद ने स्थानीय तिब्बती विधायिकाओं में लोकतंत्र को मजबूत करने पर कार्यशाला का आयोजन किया

Tibet.net, २८ जुलाई २०२२

फुंटसोकलिंग, ओडिशा। ओडिशा में तिब्बती बस्ती के सेटलमेंट अधिकारियों और स्थानीय तिब्बती विधायिकाओं में जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए २५ से २९ जुलाई २०२२तक पांच दिवसीय कार्यशाला चल रही है। यह कार्यशाला फुंटसोकलिंग तिब्बती बस्ती, मैनपाट फेंडेलिंग तिब्बती बस्तीऔर बांदारा नोर्गीलिंग में आयोजित की गई है। कार्यशाला में ओडिशा तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन के क्षेत्रीय सदस्यों के अलावा तिब्बती बस्ती के अधिकारी भी उपस्थित थे। निर्वासित

तिब्बती संसद द्वारा आयोजित कार्यशाला के लिए मुख्य वक्ता (रिसोर्स पर्सन) डिप्टी स्पीकर डोल्मा त्सेरिंग तेखांग और सांसद कर्मा गेलेक हैं।

सांसद कर्मा गेलेक।

कार्यशाला २५ जुलाई को एक संक्षिप्त उद्घाटन समारोह के साथ शुरू हुई, जिसमें निर्वासित तिब्बती संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा त्सेरिंग तेखांग, सांसद कर्मा गेलेक, कार्यवाहक सेटलमेंट अधिकारी थुप्टेन, एलटीए के अध्यक्ष ताशी तेनज़िन, क्षेत्रीय तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन के अध्यक्ष और प्रतिभागियों की उपस्थिति रही। कार्यशाला का उद्घाटन कार्यवाहक सेटलमेंट अधिकारी के स्वागत भाषण के साथ शुरू हुआ, इसके बाद सांसद कर्मा गेलेक, डिप्टी स्पीकर डोल्मा त्सेरिंग तेखांग और अन्य लोगों के भाषण हुए।

डिप्टी स्पीकर ने अपने संबोधन में प्रतिभागियों को तिब्बती संसदीय सचिवालय और उसके कामकाज के बारे में जानकारी दी। जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए स्थानीय तिब्बती संघों (एलटीए) को ठीक से काम करने की आवश्यकता पर बोलते हुए डिप्टी स्पीकर ने परम पावन दलाई लामा द्वारा तिब्बती लोगों को दिए गए लोकतंत्र के लाभों को दोहराया और साथ ही उपस्थित लोगों को उस जिम्मेदारी की याद दिलाई जो इस लोकतंत्र के साथ आती है।

सांसद कर्म गेलेक ने कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्य और इसके महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने स्पष्ट किया कि स्थानीय तिब्बती सभा का गठन परम पावन दलाई लामा के दृष्टिकोण के अनुसार किया गया था जो चार्टर में भी निहित है।

संक्षिप्त उद्घाटन समारोह के बाद कार्यशाला का पहला दिन डिप्टी स्पीकर के संबोधन के साथ आगे बढ़ा, जिसमें विधायिकाओं में संसदीय प्रक्रियाओं, जनादेशों और संरचनाओं को स्पष्ट किया गया।इसमें तारांकित प्रश्न उठाना, प्रस्ताव पारित करना, ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पेश करना और विधायी संशोधन प्रस्तावों को पेश करना शामिल है। उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए संदेहों को और स्पष्ट किया।

कार्यशाला के दूसरे दिन सांसद कर्मा गेलेक द्वारा निर्वासित तिब्बतियों के चार्टर में निहित विभिन्न लेखा मुद्दों और बजटों से संबंधित नियमों और विनियमों का विवरण प्रदान किया गया। इन में आवर्ती बजट, विशेष आवर्ती बजट और ***सुरक्योल*** बजट के बारे में जानकारी दी गई। कार्यशाला का तीसरा दिन कार्यशाला के अंतिम दो दिनों में होने वाले मॉक सेशन की तैयारी को समर्पित रहा।

कार्यशाला में ३५प्रतिभागियों ने भाग लिया है और लोकतांत्रिक सिद्धांतों की समझ के साथ अधिकतम लोगों को लाभान्वित करने के लिए कार्यशाला में एलटीए के सदस्यों के अलावा, क्षेत्रीय तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन के सदस्यों और कुछ इच्छुक लोगों को भी शामिल होने की अनुमति दी गई है।

• निर्वासित तिब्बती सांसद ने 'रिपब्लिक' से बात की, दलाई लामा के प्रभाव से चीन के चिंतित होने का कारण बताया

Tibet.net, २१ जुलाई २०२२, रिपब्लिक वर्ल्ड

सांसद थुप्तेन ग्यात्सो।

दलाई लामा की लद्दाख यात्रा के बाद चीन द्वारा तिब्बतियों पर नकेल कसने के मद्देनजर रिपब्लिक टीवी ने निर्वासित तिब्बती सांसद थुप्टेन ग्यात्सो से विशेष बात की। थुप्टेन ग्यात्सो ने विस्तार से बताया कि कम्युनिस्ट देश चीन लोगों के खिलाफ दमन क्यों तेज कर रहा था। थुप्टेन ग्यात्सो ने रिपब्लिक को बताया कि तिब्बती लोगों के खिलाफ चीनी दमन कोई नई बात नहीं है।चीन दलाई लामा को 'दानव' की तरह पेश कर रहा था, क्योंकि वह स्वतंत्र तिब्बत के जीवित प्रतीक के रुप में खड़े थे।

ग्यात्सो ने कहा,'तिब्बती लोगों के प्रति चीनी सत्ता को बिल्कुल भरोसा नहीं है। वे घनघोर दमन का सहारा ले रहे हैं, और भारी संख्या में गिरफ्तारियां नियमित आधार पर की जाती हैं। दलाई लामा भारत सरकार के अतिथि हैं और इसीलिए भारत के विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा करने के लिए स्वतंत्र हैं। लद्दाख भारत का हिस्सा है, और वह वहां यात्रा करने के लिए स्वतंत्र हैं। इसमें कोई मिलीभगत नहीं है। दुर्भाग्य से, तिब्बतियों का दमन और गिरफ्तारी १९४९ में चीनी कब्जे के बाद से हो रहा है। पिछले ७० वर्षों मेंहमें कठोर दमन का सामना करना पड़ रहा है।'

उन्होंने आगे कहा, 'यहां मुख्य मुद्दा परम पावन दलाई लामा द्वारा तिब्बत का प्रतिनिधित्व करना है। वह चीनी आक्रमण से पहले स्वतंत्र तिब्बत के जीवित प्रतीक हैं। परम पावन हिमालयी देशों और उन सभी क्षेत्रों में तिब्बतियों के संप्रभु और सर्वोच्च नेता हैं जहां तिब्बती बौद्ध धर्म अपनाया गया है। चीनी सरकार परम पावन के प्रभाव और ताकत को अच्छी तरह से जानती है। परम पावन चीन के भीतर भी बहुत सारे लोगों को आकर्षित करते है। यही कारण है कि चीन उन्हें बदनाम करने और उसके प्रभाव को कम करने की कोशिश करता रहा है। हालांकि परम पावन का एजेंडा सिर्फ लद्दाख जाना था।

पिछले हफ्ते चीनी पुलिस ने तिब्बती आध्यात्मिक नेता की तस्वीर रखने के लिए यूडॉन नाम

की एक २०वर्षीया महिला को गिरफ्तार किया था। उन पर अपनी बहन जुमकर के साथ अपने घर में दलाई लामा की एक तस्वीर रखने का आरोप लगाया गया था। दलाई लामा की लद्दाख यात्रा के बाद क्षेत्र के अन्य हिस्सों में भी इसी तरह की मनमानी गिरफ्तारी देखी गई है।

• प्रतिनिधि डॉ. आर्य ने जापान संसदीय समर्थक समूह के कार्यालय का दौरा किया

Tibet.net, २८ जुलाई २०२२

डॉ. आर्य त्सेवांग ग्यालपो और जापानी सांसद इशिकावा अकीमासा।

टोक्यो। जापान और पूर्वी एशिया के तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि डॉ. आर्य त्सेवांग ग्यालपो ने आज २८ जुलाई को जापानी संसद भवन में निचले सदन का दौरा किया और तिब्बत के लिए अखिल-जापान संसदीय समर्थक समूह (एजेपीएसजीटी) के महासचिव श्री इशिकावा अकीमासा से मुलाकात की।

पिछले रविवार को भारत से लौटे प्रतिनिधि आर्य ने जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की गोली मारकर की गई नृशंस हत्या पर दुख और निराशा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि श्री शिंजो आबे चीन-तिब्बत संघर्ष को सुलझाने के लिए बहुत दयालु और सहायक रहे और उन्होंने इस मुद्दे पर अच्छा मार्गदर्शन किया था।

परम पावन दलाई लामा,केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के राष्ट्रपति पेन्पा छेरिंग,निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेलऔर सूचना और अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) के कालोन नॉरज़िन डोल्मा के शोक संदेश को पहले संपर्क कार्यालय के माध्यम से प्रेषित किया गया था। लेकिन प्रतिनिधि आर्य ने व्यक्तिगत रूप से संसदीय समर्थक समूह के कार्यालय का दौरा किया और इस त्रासदी के लिए शोक संतप्त परिवार और पार्टी को तिब्बत के अंदर और बाहर रह रहे तिब्बतियों की एकजुटता से अवगत कराया।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) ने ११ जुलाई को दिवंगत आत्मा के लिए एक आधिकारिक शोक और प्रार्थना-सत्र आयोजित किया था। इसके अलावा, जापान में तिब्बती समुदाय ने १८ जुलाई को शिंजुकु-कु में कार्यालय परिसर में एक प्रार्थना सभा आयोजित की थी।

श्री इशिकावा अकीमासा ने इस महत्वपूर्ण समय में तिब्बती लोगों की भावना और एकजुटता की सराहना की। उन्होंने कहा कि श्री शिंजो आबे परम पावन दलाई लामा के बहुत बड़े प्रशंसक और तिब्बत मुद्दे के समर्थक थे। उनका निधन सभी के लिए एक महत्वपूर्ण क्षति है। उन्होंने उम्मीद जताई कि जापानी सांसद शिंजो आबे की तर्ज पर तिब्बत मुद्दे का समर्थन करना जारी रखेंगे।

प्रतिनिधि आर्य ने श्री इशिकावा को २२और २३ जून को वाशिंगटन डीसी में आयोजित तिब्बत पर आठवें विश्व संसदीय सम्मेलन के दौरान पारित किए गए आचरण और प्रस्तावों से अवगत कराया।

तिब्बत के लिए जापानी संसदीय समर्थक समूह के अध्यक्ष श्री शिमोमुरा हकुबुन ने सम्मेलन के लिए एक लिखित और वीडियो संदेश भेजा था, जिसे सम्मेलन में आगत प्रतिभागियों ने खूब सराहा।

श्री इशिकावा को आर्य ने सम्मेलन की रिपोर्ट का जापानी अनुवाद, ब्रीफिंग पाठ्य-पुस्तक, और सम्मेलन का स्मृति-चिन्ह भेंट किया। तिब्बत कार्यालय के श्री त्सेल्हा प्रतिनिधि आर्य के साथ संसदीय समर्थक समूह के कार्यालय गए थे।

• तिब्बत के लिए ऐतिहासिक क्षण : जिनेवा में पार्क डू तिब्बत में तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज और बौद्ध ध्वज फहराया गया

Tibet.net, ०७ जुलाई २०२२

जिनेवा में पार्क डू तिब्बत में तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज और बौद्ध ध्वज फहराया गया।

जिनेवा। परम पावन दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन के अवसर पर०६ जुलाई २०२२को पहली बार तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज और बौद्ध ध्वज जिनेवा के पार्क डू तिब्बत में सुबह १०:३० बजे फहराया गया।

तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज को परम पावन दलाई लामा के तिब्बत ब्यूरो, जिनेवा स्थित प्रतिनिधि थिनले चुक्की और वनेक्स के पूर्व मेयर और स्विस सांसद रेने लॉन्गेट द्वारा फहराया गया। लॉन्गेट वर्तमान में स्विस- तिब्बत फ्रेंडशिप एसोसिएशन- फ्रेंच स्पीकिंग सेक्शन के मुख्य समन्वयक हैं। बौद्ध ध्वज को स्विट्जरलैंड और लिकटेंस्टीन में तिब्बती समुदाय के उपाध्यक्ष तेनज़िन वांगडु और स्विट्जरलैंड के ड्रिकुंग काग्यू दोर्जे लिंग केंद्र के लामा कुनसांग द्वारा फहराया गया था। पार्क में ध्वजारोहण स्थायी रूप से किया जाएगा।

ध्वजारोहण से पहलेस्तूप के अभिषेक के लिए एक छोटा बौद्ध धार्मिक समारोह आयोजित किया गया था, जिसका नेतृत्व स्विट्जरलैंड के ड्रिकुंग काग्यू दोर्जे लिंग केंद्र के लामा कुनसांग ने किया। स्तूप के अंदर बुद्ध की पवित्र प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा की गई। यह प्रतिमा परम पावन दलाई लामा के कार्यालय द्वारा पिछले वर्ष उपहार में दी गई थी।

तिब्बत ब्यूरो-जिनेवा के प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने इस महत्वपूर्ण आयोजन

के लिए स्विट्जरलैंड और लिकटेंस्टीन के तिब्बती समुदाय के जिनेवा खंड को धन्यवाद दिया। तिब्बत ब्यूरो- जिनेवा के संयुक्त राष्ट्र के एडवोकेसी अधिकारी कलडेन त्सोमो, स्विट्जरलैंड और लिकटेंस्टीन के तिब्बती समुदाय के उपाध्यक्ष तेनज़िन वांगडु, स्विस- तिब्बती मैत्री संघ के फ्रेंच भाषी खंड के सह-प्रतिनिधि, जिनेवा खंड के तिब्बती समुदाय के सदस्यों के साथ इसके अध्यक्ष योंगा त्सेसुत्संग और स्थानीय तिब्बती समुदाय और तिब्बत समर्थक इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में उपस्थित हुए।
परम पावन दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन पर जिनेवा के स्थानीय तिब्बती समुदाय के सदस्यों और तिब्बत समर्थकों ने परम पावन दलाई लामा के अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु होने के लिए प्रार्थना की ताकि वे पूरी मानवता के लिए शांति और सकारात्मकता को प्रेरित करते रहें।
पार्क डू तिब्बत का उद्घाटन १४फरवरी १९९८को बर्नेक्स के मेयर द्वारा तिब्बतियों और उनके देशतिब्बत की स्वतंत्रता के लिए उनके अहिंसक संघर्ष का समर्थन करने के लिए किया गया था। इसके बादपार्क में एक बौद्ध स्तूप का निर्माण किया गया, जिसका उद्घाटन ०१अक्तूबर २००१को मेयर और बर्नेक्स की परिषद द्वारा तिब्बत ब्यूरो-जिनेवा के अधिकारियों और रिकॉन मठ के भिक्षुओं की उपस्थिति में किया गया था। इस स्तूप को स्तूप ऑफ एनलाइटेनमेंट (ज्ञान- स्तूप) कहा जाता है।

• प्रतिनिधि रिगज़िन जेनखांग ने यूरोपीय संघ में कैटलन सरकार के प्रतिनिधि से मुलाकात की

Tibet.net, २० जुलाई २०२२

ब्रुसेल्स, २० जुलाई। यूरोपीय संघ और पश्चिमी यूरोप में परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधि रिगज़िन जेनखांग ने मंगलवार को यूरोपीय संघ में कैटेलोनिया सरकार के प्रतिनिधि माननीय गोर्का नॉर से उनके क्वार्टर स्थित कार्यालय में शिष्टाचार भेंट की।

प्रतिनिधि रिगज़िन जेनखांग और यूरोपीय संघ कैटलन सरकार के प्रतिनिधि श्री गोर्का नॉर।

बैठक के दौरान प्रतिनिधि जेनखांग ने परम पावन दलाई लामा की २००७ में बार्सिलोना और कैटलन संसद की यात्रा और सीटीए के नेतृत्व की लगातार यात्राओं की याद दिलाई। उन्होंने प्रतिनिधि नॉर को तिब्बतियों के निरंतर दमन और तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता पर प्रतिबंध के बारे में जानकारी दी, जिसके विरोध में तिब्बत के अंदर सभी आयु वर्ग के १५७ से अधिक तिब्बतियों ने आत्मदाह कर लिया है। उन्होंने चीनी सरकार द्वारा तिब्बत में जबरन बोर्डिंग स्कूलों के संचालन की भी जानकारी दी।

प्रतिनिधि नॉर ने जेनखांग की बातों पर ध्यान दिया और १९९० के दशक के अंत में संसद सदस्य के रूप में अपने समय को याद किया जब उन्होंने ग्रीन्स/यूरोपीय फ्री एलायंस नामक समूह की स्थापना की और बताया कि उस समय इस समूह के बहाने तिब्बत इंटरग्रुप के साथ उनका नियमित संपर्क हुआ करता था।
मुलाकात के दौरान दोनों नेताओं ने कई मुद्दों पर चर्चा की। प्रतिनिधि जेनखांग ने प्रतिनिधि नॉर की बेबाकी और एक साथ काम करने की उनकी इच्छा के लिए उनकी सराहना की।

जेनखांग की प्रतिनिधि नॉर के साथ यह पहली मुलाकात थी। दोनों नेता परम पावन दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन को मनाने के लिए ब्यूरो डू तिब्बत, ब्रुसेल्स द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में शामिल हुए थे। इससे पहले सोमवार को प्रतिनिधि जेनखांग ने कनाडाई प्रतिनिधि से मुलाकात की थी।

• भारतीय सेना के अधिकारियों ने 'बेहतर समझ' बनाने के लिए नए पाठ्यक्रम में तिब्बत के बारे में सीखा

Rfa.org, २२जुलाई २०२

सूत्रों का कहना है कि भारतीय सेना के अधिकारी एक नए पाठ्यक्रम में तिब्बत के बारे में सीख रहे हैं, जिसका उद्देश्य पूर्व में स्वतंत्र हिमालयी देश तिब्बत के बारे में बेहतर समझ को बढ़ावा देना है।तिब्बत अब चीन का हिस्सा है।

भारत के रक्षा मंत्रालय ने इस सप्ताह घोषणा की कि इस पहल की शुरुआत तिब्बत की सीमा से लगे पूर्वोत्तर के भारतीय राज्य अरुणाचल प्रदेश में केंद्रीय हिमालय और सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान में पढ़ाए जाने वाले ४२दिवसीय पाठ्यक्रम में की गई है। इस पाठ्यक्रम में भौगोलिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र में तैनात सैन्य अधिकारियों ने भाग लिया था।

मंत्रालय ने कहा कि रविवार को समाप्त होने वाले पाठ्यक्रम में तिब्बती भाषा के पाठ, तिब्बती बौद्ध धर्म और साहित्य पर कक्षाएं और सांस्कृतिक रूप से तिब्बती क्षेत्र में स्थानीय मठों का दौरा शामिल है, जिसे अब चीन अपने क्षेत्र के रूप में दावा करता है। मंत्रालय ने कहा कि भविष्य में भी इसी तरह के पाठ्यक्रम की योजना बनाई जाएंगी।

१७ जुलाई को आरएफए से बात करते हुए फ्रांस में जन्मे पत्रकार और तिब्बत विशेषज्ञ क्लाउड अर्पी ने भारत सरकार के इस पाठ्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि चीन और भारत के बीच सीमा के विवादित हिस्सों पर चल रहे तनाव के कारण इसे अब अन्य सरकारी विभागों में भी लागू किया जाना चाहिए।

महीने भर चलने वाले पाठ्यक्रम में प्रशिक्षक के रूप में अपनी सेवा देने के बाद अर्पी ने कहा,'भारत सरकार की यह पहल लद्दाख, सिक्किम और उत्तराखंड सीमा क्षेत्र में भारतीय प्रशासनिक सेवाओं और अन्य शासी भारतीय अधिकारियों के लिए भी अच्छी होगी।'

आरएफए से बात करते हुएभारत सरकार के कैबिनेट सचिवालय

के पूर्व सदस्य और अब सेंटर फॉर चाइना एनालिसिस एंड स्ट्रैटेजी के अध्यक्ष जयदेव रानाडे ने कहा कि शिक्षण कार्यक्रम की योजना जून २०२० में लद्दाख के उत्तर-पूर्वी भारतीय क्षेत्र में चीनी और भारतीय सैनिकों के बीच घातक सीमा संघर्ष के बाद बनाई गई थी। रानाडे ने कहा, 'इसके अलावा तिब्बत के इतिहास और परंपराओं का व्यापक ज्ञान होना सभी के लिए फायदेमंद होगा।'

• प्रधानमंत्री द्वारा दलाई लामा को जन्मदिन की बधाई देने पर चीन की आपत्ति को भारत ने खारिज किया

Tibetexpress.net, ०८ जुलाई २०२२

धर्मशाला, ०८ जुलाई। भारत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दलाई लामा को उनके ८७वें जन्मदिन पर बधाई देने पर चीन द्वारा की गई आलोचना को खारिज कर दिया। भारत ने कहा कि तिब्बती आध्यात्मिक नेता भारत के सम्मानित अतिथि हैं।

मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा, 'प्रधानमंत्री ने पिछले साल भी दलाई लामा को जन्मदिन की बधाई दी थी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने एक संवाददाता सम्मेलन में बीजिंग की आपत्तियों की निंदा करते हुए कहा कि यह हमारी सरकार की एक सतत नीति रही है कि उन्हें भारत में एक अतिथि के रूप में और एक सम्मानित धार्मिक नेता के रूप में माना जाए। दलाई लामा के भारत में बड़ी संख्या में अनुयायी हैं।'

इससे पहले चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता झाओ लिजियन ने भारत की इस नीति की तीखी आलोचना की थ। झाओ ने कहा कि नई दिल्ली को '१४वें दलाई लामा के चीन विरोधी अलगाववादी चरित्र को अच्छी तरह से पहचानना चाहिएऔर चीन के प्रति बोलने और कार्य करने की अपनी प्रतिबद्धता का विवेकपूर्ण ढंग से पालन करना चाहिए और चीन के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए तिब्बत संबंधित मुद्दों का उपयोग करना बंद करना चाहिए।'बागची ने इसका जवाब देते हुए कहा कि दलाई लामा के 'इस देश में बड़ी संख्या में अनुयायी हैं और उनका जन्मदिन भारत और विदेशों में भी मनाया जाता है।'

उन्होंने कहा, 'परम पावन को भारत में उनकी धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों का संचालन करने के लिए सभी उचित शिष्टाचार और स्वतंत्रता प्रदान की जाती है। परम पावन को उनके ८७वें जन्मदिन पर प्रधानमंत्री द्वारा जन्मदिन की बधाई को इस समग्र संदर्भ में देखा जाना चाहिए।'

इसके अलावा, चीन ने दलाई लामा को बधाई देने के लिए अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन को भी आड़े हाथों लिया।

इस बीच, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के प्रवक्ता तेनजिन लेक्षे ने कहा कि चीन दलाई लामा को अलगाववादी कहना सच्चाई से परे है और यह चीन की एक थोथी दलील भर है।

लेक्षे ने एक ट्वीट में कहा,'परम पावन दलाई लामा चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा करने के बाद भारत में निर्वासन में आए। परम पावन राजनीति से परे हैं और सार्वभौमिक रूप से शांति और अहिंसा के प्रतीक के रूप में पहचाने जाते हैं। चीनी विदेश मंत्रालय का उन्हें अलगाववादी कहना उसकी थोथी दलील है, जिसमें सच्चाई का लेशमात्र भी आधार नहीं है।'

परम पावन १४वें दलाई लामातेनज़िन ग्यात्सो का जन्म ०६जुलाई १९३५को पारंपरिक तिब्बती प्रांत अमदो के तकत्सेर गांव में एक किसान परिवार में हुआ था।

• तिब्बत में सीमावर्ती गांव : भारत को हिमालय में चीन की नई 'आंख और कान' से सावधान रहना चाहिए

News18.com, ०६ जुलाई २०२२

पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में १५ जून, २०२० को चीन और भारत के सैनिकों के बीच हुआ संघर्ष १९६२के बाद से दोनों देशों के बीच सबसे घातक सैन्य संघर्षों में से एक माना जाता है। गलवान घाटी में उस आमने-सामने के संघर्ष में भारत को लगभग २० सैनिकों की जान गंवाए लगभग डेढ़ साल हो चुके हैं। पिछले कुछ सालों से चीन भारत-तिब्बत सीमा पर रक्षा गांवों की एक शृंखला बनाकर भारत को घेरने के लिए नई रणनीति बना रहा है। भारत को इस मामले में अपनी क्षेत्रीय अखंडता और राष्ट्रीय सुरक्षा की भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। भविष्य में चीन की यह चाल दुनिया की सबसे ऊंची जमी हुई सीमा- हिमालय में जनसांख्यिकीय पैटर्न को बदल सकती है।

तिब्बत पर आक्रमण करके चीन ने भारत और तिब्बत के बीच की पारंपरिक सीमाओं को जबरदस्ती चीन-भारतीय सीमा में बदल दिया है। तब से, दो एशियाई दिग्गजों के बीच सीमा पर हजार से अधिक बार झड़पें हो चुकी हैं। दो-दो बार (१९५४में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा, और २००४में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा) भारत द्वारा तिब्बत को पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना का अभिन्न अंग मान लेने के बावजूद, चीनी नेताओं ने हमेशा तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन में भारत की भूमिका को संदेह की नजरों से देखा है। इसके अलावा भारत-तिब्बत सीमा पर चीन-भारत संघर्ष एशिया के सबसे लंबे भू-राजनीतिक विवादों में से एक है। चीन-भारत संघर्ष को हल करने में तिब्बत महत्वपूर्ण कारक है।

१४ मार्च, २०१३ को जब शी जिनपिंग चीन के राष्ट्रपति बनेतो उन्होंने तिब्बत में घरेलू स्थिरता और इसकी कल्पित सीमाओं की सुरक्षा को अत्यधिक महत्व दिया। इसके बादचीनी प्राधिकरण ने इस बात पर जोर दिया है कि 'तिब्बत का विकास पार्टी और देश के समग्र विकास से जुड़ा हुआ है। इसलिए मातृभूमि में तिब्बत के पुनर्मिलन और राष्ट्रीय एकता की रक्षा के लिए तिब्बत पर ध्यान देना जरूरी होगा।' राष्ट्रीय एकता की रक्षा और मातृभूमि में पुनर्मिलन के लिए अपनी तिब्बत नीति को बनाए रखते हुए चीन ने २०२० में सातवें तिब्बत कार्य मंच के दौरान राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के लिए 'तिब्बत में स्थिरता बनाए रखने' के महत्व को फिर से मजबूत किया है।

तिब्बत की सीमाओं की रक्षा और उसकी स्थिरता को सुरक्षित करने के लिएचीन ने हिमालय की सीमाओं के पार सीमा रक्षा गांवों की एक शृंखला बनाई है जो भारत, नेपाल और भूटान की सीमाओं से लगती हैं। ये गांव

तिब्बत में चीन के विकास की उपलब्धि को दिखाने और साथ-साथ सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए चीन के 'गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम' के तहत बसाए गए हैं। असल में, तिब्बत के सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे का निर्माण और अच्छी तरह से डिजाइन किए गए सीमावर्ती गांवों को दोहरे उपयोग के लिए बसाया गया है। यहां पर बुनियादी ढांचे का विकास सीमा पार आवाजाही की निगरानी के लिए सीमा चौकी के रूप में कार्य करने और हिमालय की सीमाओं पर नो-मैन लैंड की भूमि पर कब्जा करने की नीयत से किया जा रहा है। प्रोफेसर डावा नोरबू और क्लाउड अर्पी दोनों ने तिब्बत में बुनियादी ढांचे के विकास के दोहरे उपयोग पर लिखा है। सड़कों और रेलवे लाइनों का अच्छा नेटवर्क चीन को तिब्बत के सीमावर्ती क्षेत्रों में अपनी सेना को तैनात करने में आसान पहुंच प्रदान करता है।

चीन के तथाकथित तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) की २०१७की कार्य रिपोर्ट के अनुसार, चीनी सरकार ने 'अच्छी तरह से गांवों के निर्माण और साथ-साथ इन गांवों में तिब्बतियों के पुनर्वास' नाम से ग्रामीण कायाकल्प कार्यक्रम शुरू किए हैं। तिब्बत की सीमा पर लोगों को बसाने और सीमा रक्षा गांवों के निर्माण का फैसला भी अक्तूबर २०१७में १९वीं पार्टी कांग्रेस में लिया गया था, जिसमें शी जिनपिंग ने 'प्रतिभाशाली चीनी लोगों को नस्लीय तौर पर अल्पसंख्यक आबादी वाले दूरदराज और सीमावर्ती क्षेत्रों में काम करने के लिए' कहा था।

जुलाई २०१७ में टीएआरने 'तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के सीमावर्ती क्षेत्रों में समृद्ध गांवों के निर्माण की योजना (२०१७-२०२०)' नामक नीति दस्तावेज जारी किया था। इसमें २१ सीमावर्ती काउंटियों के ११२सीमावर्ती टीएआर कस्बों में ६२८ सीमावर्ती गांवों के निर्माण की योजना शामिल थी। यह पूरा क्षेत्र शिगात्से, ल्होखा, न्यिंगची और न्गारी प्रान्तों में स्थित हैं। चीन ने ल्होखा में ३५४ सीमावर्ती गांवों का निर्माण किया है जो भारतीय राज्य अरुणाचल प्रदेश और भूटान की सीमाओं से सटे हुए हैं। चीन का दावा है कि अरुणाचल प्रदेश चीन का अभिन्न अंग है। इन गांवों का निर्माण सीमावर्ती क्षेत्रों में भविष्य के कस्बों और शहरों के लिए आधार तैयार कर सकता है।

चीनी सरकार ने तिब्बत में ६२८ सीमावर्ती गांवों के निर्माण के लिए लगभग ३०.१ अरब आरएमबी (लगभग ४.६ अरब डॉलर) आवंटित किया है। आवंटित बजट में आवास सुविधाओं, बुनियादी ढांचे और सार्वजनिक सेवा सुविधाओं का निर्माण भी शामिल है। इन ६२८ प्रशासनिक सीमावर्ती गाँवों में से ४२७ प्रथम-पंक्ति के सीमावर्ती गांव और २०१ दूसरी-पंक्ति के सीमावर्ती गांव हैं। पहली पंक्ति के सीमा रक्षा गांव वास्तविक नियंत्रण रेखा के निकट या उसके पार बने हैं, जिनका भारत, नेपाल और भूटान पर प्रत्यक्ष और सीधा भू-राजनीतिक प्रभाव पड़ता है। दूसरी पंक्ति के सीमा रक्षा गाँव तिब्बत के सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित हैं। लोगों को वहां बसने के लिए प्रोत्साहित करने के लिएचीनी प्राधिकरण ने सीमावर्ती गांवों के निवासियों को उनके स्थायी बंदोबस्त के लिए अनुकूल वातावरण और आकर्षक सब्सिडी की सुविधा प्रदान की है। पहली पंक्ति के गांवों के निवासियों को ४७,००० आरएमबी प्रदान किए जाते हैं और दूसरी पंक्ति के गांवों को वार्षिक सब्सिडी के रूप में ४५०० आरएमबी दिए जाते हैं।

टीएआर के कार्यकारी उपाध्यक्ष जियांग जी ने 'आटोनॉमस रिजन स्ट्रॉग फ्रंटियर वर्क कंफ्रेंस (स्वायत्त क्षेत्र मजबूत सीमावर्ती कार्य सम्मेलन)' में एक विशेष बैठक की अध्यक्षता की, जो दिसंबर २०२० में द्रोमो काउंटी के शिगात्से शहर के यतुंग में आयोजित की गई थी।इस बैठक में अच्छी तरह से सीमावर्ती गांवों के निर्माण की प्रगति का निरीक्षण किया गया था। बैठक में बताया गया कि परियोजना का ९४ प्रतिशत दिसंबर २०२० तक पूरा हो गया था और ९३ प्रतिशत आवंटित धन का उपयोग किया जा चुका था। इस तरह से चीन ने अब तक ६२८ सीमा रक्षा गांवों का निर्माण पूरा कर लिया है।
ये सीमा रक्षा गांव पूरा होने के बाद सीमा चौकी के रूप में कार्य करेंगे और हिमालय में सीमाओं का विस्तार और सीमा को सुरक्षित करने की दिशा में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के कान और आंख बन जाएंगे। रणनीतिक रूप से सीमा रक्षा गांवों की पहली पंक्ति के निर्माण से चीन को हिमालयी क्षेत्रों में विवादित क्षेत्रों पर अपने दावों की पुष्टि करने में मदद मिलेगी, जिस पर बीजिंग लंबे समय से तिब्बत की पांच अंगुलियों के रूप में दावा करता आ रहा है।

लेखक धर्मशाला में तिब्बत नीति संस्थान में रिसर्च फेलो हैं। उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से अंतरराष्ट्रीय संबंध विषय में पीएचडी की है।

*****

परम पवन दलाई लामा जी का ८७वां जन्मदिन मनाते तिब्बत समर्थक समूहों

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tenzin Jordan
Deputy Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

तेनजिंग जॉर्डन
उप–समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

July, 2022, Years: 43 Issue: 07 Regd No. : RNI 34636-79

परम पवन दलाई लामा जी का ८७वां जन्मदिन मनाते तिब्बत समर्थक समूहों के सदस्या

चेक गणराज्य के उप प्रधानमंत्री और एमईपी मिकुलस पेक्सा के साथ तिब्बती प्रतिनिधिमंडल।